इसके बाद घोषणा की गयी है—"**इमं णिग्गथं पावयणं --- अणुत्तरं--- सेढिमग्गं-मोक्खमग्गं --- उत्तमं तं सद्दहामि तं पत्तियामि तं रोचेमि तं फासेमि--- इदो उत्तरं अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भविस्सदि--- समणोमि।**" (प्रतिक्रमणग्रन्थत्रयी/पृ. ६४-६९)।

अनुवाद-"यह निर्ग्रन्थलिंग आगम में प्रतिपादित किया गया है।--- मोक्ष का इससे उत्कृष्ट मार्ग और कोई नहीं है। --- यह निर्ग्रन्थलिंग उपशमश्रेणी और क्षपक-श्रेणी पर आरोहण का उपाय है,--- मोक्ष का मार्ग है,--- मोक्षरूप उत्तम अर्थ का साधक होने से उत्तम है। मैं इसका श्रद्धान करता हूँ, इसको प्राप्त होता हूँ, इसमें ही रुचि करता हूँ, इसका अवलम्बन करता हूँ।---इस निर्ग्रन्थलिंग से उत्कृष्ट मोक्ष का और कोई मार्ग नहीं है, न कभी था और न कभी होगा।--- इस निर्ग्रन्थलिंग में स्थित होने से ही मैं श्रमण हूँ।"[१८] ("**तथा एतस्मिन्निर्ग्रन्थलिङ्गे सति 'समणोमि' श्रमणोऽस्मि मुनिर्भवामि।**" प्रभाचन्द्रकृतटीका/प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी/पृ.६९)।

उक्त कथन का सार प्रतिपादित करते हुए टीकाकार प्रभाचन्द्र लिखते हैं—

"**उत्कृष्टेन सर्वज्ञप्रणीतागमेन निर्ग्रन्थलिङ्गस्यैव मोक्षादिहेतुतया प्रतिपादकत्वात्---।**" (वही/पृ. १२२)।

अनुवाद—"सर्वज्ञप्रणीत होने से जो आगम उत्कृष्ट है, उसमें निर्ग्रन्थलिंग को ही मोक्ष का हेतु बतलाया गया है।"

इन वचनों से सिद्ध है कि **प्रतिक्रमणग्रन्थत्रयी** में एकमात्र वस्त्रपात्रादिग्रन्थ से रहित निग्रन्थलिंग को ही मोक्ष का उपाय बतलाया गया है, अत: इसमें आपवादिक सवस्त्रमुक्ति, स्त्रीमुक्ति, गृहस्थमुक्ति एवं परशासनमुक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। यह इसके यापनीयग्रन्थ न होने, अपितु दिगम्बरग्रन्थ होने का निर्विवाद प्रमाण है।

और भी कहा गया है-"**पंचमं वदमस्सिदो--- बज्झब्भंतरेसु य।**" इसे स्पष्ट करते हुए टीकाकार प्रभाचन्द्र कहते हैं-"**पञ्चमं परिग्रहाद्विरतिलक्षणं व्रतमाश्रितोऽहं--- बाह्याभ्यन्तरेषु च द्रव्येषु विरतो भवामि। बाह्यानि वस्त्राभरणादीनि, अभ्यन्तराणि तु द्रव्याणि ज्ञानावरणादीनि।**" (वही/पृ.१३४)।

यहाँ 'परिग्रहविरति' नामक पंचम महाव्रत में वस्त्रादि बाह्य द्रव्यों से विरति (त्याग) आवश्यक बतलायी गयी है।

दिगम्बरमतानुसार ही मुनियों के लिए आचेलक्यादि २८ गुण मूलरूप से आवश्यक बतलाये गये हैं। यथा—

---

१८. यह अनुवाद प्रभाचन्द्रकृत टीका पर आधारित है।

"**मूलगुणेसु।**" इसकी टीका में प्रभाचन्द्र लिखते हैं-"**पञ्च व्रतानि, पञ्च समितयः, पञ्चेन्द्रियनिरोधाः षडावश्यकाः (कानि), आचेलक्यं, लोचोऽदन्तधावन-मस्नानं, क्षितिशयनं, स्थितिभोजमेकभुक्तं चेत्यष्टाविंशतिर्मूलगुणाः, तेषु।**" (वही/ पृ.१५१)।

इन २८ मूलगुणों में **आचेलक्य** न तो श्वेताम्बरपरम्परा में मुनियों का मूल (आधारभूत, अनिवार्य) गुण माना गया है, न यापनीयपरम्परा में। श्वेताम्बरमत में सर्वथा सचेललिंग ही मुनिलिंग माना गया है, और यापनीयमत में उसे अपवादरूप से मान्यता दी गयी है। अतः सिद्ध है कि 'प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी' दिगम्बरपरम्परा का ही ग्रन्थ है।

५. इसमें अन्य मतों और अन्य लिंगों की प्रशंसा को अर्थात् उन्हें मोक्षमार्ग बतलाने को दर्शनाचार का परित्याग कहा गया है यथा—

"**दंसणायारो अट्ठविहो।--- परिहाविदो संकाए, कंखाए--- अण्णदिट्ठिपसंसणाए, परपासंडपसंसणाए---।**" (वही / पृ.१६०-१६१)।

आचार्य प्रभाचन्द्र ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है-"**दर्शनाचारोऽष्टविधः परिहापितः परित्यक्तः। कयेत्याह-शङ्कया, कांक्षया--- अन्येषां मिथ्यादृष्टीनां दृष्टयो मतानि, तेषां प्रशंसनया, परेषां मिथ्यादृष्टीनां पाषण्डानि लिङ्गनि, तेषां प्रशंसनया---।**" (वही / पृ. १६०-१६१)।

अनुवाद—"आठ प्रकार का दर्शनाचार छूट जाता है। किससे? शंका, कांक्षा---अन्यमत की प्रशंसा, अन्य लिंग (मुनिवेश) की प्रशंसा (अर्थात् उन्हें मोक्षमार्ग बतलाने) आदि से। (अतः उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए)।"

यापनीयमत परशासन अर्थात् अन्यलिंग से मुक्ति मानता है, उसका यहाँ निषेध किया गया है, इससे भी सिद्ध होता है कि यह ग्रन्थ यापनीयसम्प्रदाय का नहीं, अपितु दिगम्बर-सम्प्रदाय का है।

६. इसमें '**णवण्हं णो कसायाणं**' (पृ.१२) इस वचन द्वारा नौ नोकषायों का अस्तित्व बतलाया गया है, जिनमें स्त्रीवेद, पुंवेद और नपुंसकवेद ये अलग-अलग तीन वेद स्वीकार किये गये हैं। यह वचन यापनीयमत के विरुद्ध है। यापनीयमत केवल एक वेदसामान्य स्वीकार करता है।

७. **णिग्गंथं सेढिमग्गं** (पृ. ६६) वचन द्वारा निर्ग्रन्थलिंग को गुणस्थानों की उपशमकश्रेणी और क्षपकश्रेणी पर आरोहण का उपाय कहा गया है, जिससे ज्ञाता होता है कि 'प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी' को गुणस्थानसिद्धान्त मान्य है, यह यापनीयों को मान्य नहीं है।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

इस प्रकार यह ग्रन्थ यापनीयमत-विरुद्ध सिद्धान्तों से भरा पड़ा है, यह त्रिकाल में यापनीयग्रन्थ नहीं हो सकता।

डॉ० सागरमल जी ने इस ग्रन्थ के टीकाकार आचार्य प्रभाचन्द्र को अपनी कल्पना के आधार पर यापनीयसंघ के कण्डूरगण से सम्बद्ध बतलाया है, किन्तु प्रभाचन्द्र ने जितने भी संघ और गणों के आचार्यों की निषीधिका को नमस्करणीय कहा है, वे सब दिगम्बरपरम्परा के हैं। यथा—

"--- **कुलकराणां नन्दि-देव-सेन-सिंहसङ्घ-देशिगण-बलात्कारगण-काणूर-गण-सूरस्थगणप्रभृति-सङ्घगण-भेदकराणां च याः काश्चिन्निषीधकास्ता नमस्यामि।**" (वही / पृ.२८)।

इन संघों के दिगम्बरपरम्परा से सम्बद्ध होने के प्रमाण इन्द्रिनन्दिकृत 'श्रुतावतार' (कारिका ९३-१००) में उपलब्ध हैं। काणूरगण भी मूलसंघ अर्थात् दिगम्बरजैनसंघ का ही गण था, यापनीयसंघ में कण्डूरगण था। ये, दोनों गण भिन्न-भिन्न थे। इसकी सप्रमाण सिद्धि सप्तम अध्याय के तृतीय प्रकरण में की जा चुकी है। इस प्रमाण से आचार्य प्रभाचन्द्र का दिगम्बरपरम्परा से सम्बद्ध होना निर्विवाद है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी टीका में जो एकमात्र निर्ग्रन्थलिंग के मोक्षमार्ग होने का प्रतिपादन किया है तथा मुनि के लिए आचेलक्यादि २८ मूलगुणों को अनिवार्य बतलाया है, उससे भी उनके दिगम्बराचार्य होने में कोई सन्देह नहीं रहता।

प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी में उद्धृत जिन गाथाओं की विषयवस्तु श्वेताम्बर-आगम **ज्ञातृधर्मकथांग** तथा **सूत्रकृतांग** की गाथाओं में वर्णित विषयवस्तु से साम्य रखती है, उन्हें यदि इन आगमों से ही गृहीत माना जाय, तो भी यह ग्रन्थ यापनीय-सम्प्रदाय का सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें आपवादिक सवस्त्रमुक्ति, स्त्रीमुक्ति, गृहस्थमुक्ति, परशासनमुक्ति आदि उन सिद्धान्तों का निषेध है, जो यापनीयमत के मौलिक सिद्धान्त हैं।

जिस मनुष्य का शरीर ही पुरुष का न हो, वह यदि पुरुष के वस्त्र पहन ले, तो पुरुष नहीं कहला सकता, वैसे ही जिस ग्रन्थ में सिद्धान्त ही यापनीयमत के न हों, बल्कि जो यापनीयमत-विरुद्ध सिद्धान्तों से भरा हो, उसमें यदि श्वेताम्बरागम-सदृश गाथाएँ या विषयवस्तु उपलब्ध हो, तो वह यापनीयग्रन्थ नहीं कहला सकता। इसके बावजूद उसे यापनीयग्रन्थ कहा जाय, तो इससे पाठकों को यापनीयमत के विषय में उलटी जानकारी मिलेगी। पाठक समझेंगे कि यापनीयमत वह है, जो अपवादरूप से भी मुनि के लिए सचेललिंग का निषेध करता है तथा स्त्रीमुक्ति, गृहस्थमुक्ति एवं अन्यलिंगिमुक्ति को अमान्य करता है, जब कि वास्तविकता यह है कि यापनीयमत

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

में ये सब बातें मान्य हैं। अतः श्वेताम्बर-आगमों की गाथाओं या विषय वस्तु से साम्य रखनेवाली दिगम्बरमतानुरूप गाथाओं एवं विषयवस्तु की उपलब्धि से 'प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी' यापनीयग्रन्थ सिद्ध नहीं होता। तथापि उसमें उपर्युक्त गाथाएँ या कोई सदृश विषयवस्तु श्वेताम्बर-आगमों से गृहीत नहीं है।

एकादश अध्याय (षट्खण्डागम) के तृतीय प्रकरण में स्पष्ट किया जा चुका है कि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों की कतिपय गाथाओं एवं विषयवस्तु में साम्य इसलिए है कि श्वेताम्बरपरम्परा उसी मूल निर्ग्रन्थपरम्परा से उद्भूत हुई है, जो आगे चलकर दिगम्बरपरम्परा कहलाने लगी। प्रतिक्रमणग्रन्थत्रयी में उक्त गाथाएँ एवं विषय-वस्तु किसी दिगम्बरग्रन्थ से ही ली गई हैं, जो वर्तमान में अनुपलब्ध है। धवलाकार वीरसेन स्वामी ने एक **छेदसुत्त** ग्रन्थ का उल्लेख किया है,[१९] वह वर्तमान में अप्राप्य है। संभव है उक्त गाथाएँ एवं विषयवस्तु इसी ग्रन्थ से ग्रहण की गई हों। अतः विषयवस्तुगत उक्त साम्य ग्रन्थ के यापनीय होने का हेतु नहीं है।

रात्रिभोजनविरमण को सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थराजवार्तिक, विजयोदयाटीका आदि दिगम्बरपरम्परा के ग्रन्थों में भी छठे व्रत के रूप में वर्णित किया गया है। (देखिए, अध्याय १४/प्रकरण २/शी.७)। अतः इसे वर्णित करने के कारण **प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी** यापनीयग्रन्थ सिद्ध नहीं होती।

उपर्युक्त सात हेतु किसी भी ग्रन्थ के दिगम्बरीय होने के असाधारण धर्म हैं। वे प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी में उपलब्ध हैं, अतः उसके दिगम्बरग्रन्थ होने में सन्देह के लिए स्थान नहीं हैं।

---

१९. "ण च दव्वित्थीणं णिग्गंथत्तमत्थि, चेलादिपरिच्चाएण विणा तासिं भावणिग्गंथत्ताभावादो, ण च दव्वित्थिणवुंसयवेदाणं चेलादिचागो अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो।" धवला/ष.खं./पु.११/४, २, ६, १२/पृ.११४-११५।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

पंचविंश अध्याय

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

पंचविंश अध्याय

बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र

इसके दिगम्बरग्रन्थ होने के प्रमाण

१

दिगम्बरमत में भी जिनकल्प-स्थविरकल्प मान्य, किन्तु दोनों नाग्न्यलिंगी

ईसा की लगभग १०वीं शताब्दी में हुए बृहत्प्रभाचन्द्र ने उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर एक और संक्षिप्त तत्त्वार्थसूत्र की रचना की है। यह वस्तुतः उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्र का ही संक्षिप्तीकरण है। प्रभाचन्द्र ने अपने नाम के पूर्व 'बृहत्' विशेषण जोड़कर अपने समय के अन्य प्रभाचन्द्रों से पृथक्त्व द्योतित किया है। उन्होंने ग्रन्थ के प्रारंभ में इसे **दशसूत्र**[१] और अन्त में **जिनकल्पिसूत्र**[२] नाम दिया है, किन्तु प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका में **तत्त्वार्थसूत्र** नाम से अभिहित किया है।[३] इसमें मात्र १०५ सूत्र हैं।

'जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय' ग्रन्थ के लेखक डॉ० सागरमल जी जैन ने इसे केवल इसलिए यापनीयग्रन्थ माना है कि इसके अन्त में '**इति जिनकल्पिसूत्रं समाप्तम्**' लिखा है। लेखक महोदय लिखते हैं—

"इसके अन्त में दिया गया 'जिनकल्पिसूत्र' विशेषण इसके यापनीय होने का प्रमाण दे देता है। क्योंकि यापनीय श्वेताम्बरों के समान स्थविरकल्प और जिनकल्प दोनों को मान्य करके भी जिनकल्प पर विशेष बल देते हैं। यापनीयग्रन्थ 'भगवती-आराधना' एवं 'मूलाचार' में जिनकल्प और स्थविरकल्प के उल्लेख पाये जाते हैं, इससे यही सिद्ध होता है कि इस तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता प्रभाचन्द्र यापनीयसम्प्रदाय के रहे होंगे। क्योंकि दिगम्बरपरम्परा के आचार्य तो जिनकल्प और स्थविरकल्प ऐसी मान्यता ही स्वीकार नहीं करते हैं। इससे तत्त्वार्थसूत्र का यापनीय प्रभाचन्द्र की कृति होना सुनिश्चित होता है।" (जै.ध.या.स./पृ.२०७)।

---

१. "ॐ नमः सिद्धम्। अथ दशसूत्रं लिख्यते।" तत्त्वार्थसूत्र / सम्पादक-जुगलकिशोर मुख्तार/वीर सेवा मन्दिर, सहारनपुर/ पृ. १२।

२. "इति जिनकल्पिसूत्रं समाप्तम्।" वही/पृ. १६।

३. "इति श्री बृहत्प्रभाचन्द्रविरचिते तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायः।" वही/ पृ. २३।

लेखक महोदय इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि दिगम्बरपरम्परा में भी जिनकल्प और स्थविरकल्प माने गये हैं, किन्तु उनका स्वरूप श्वेताम्बरों एवं यापनीयों द्वारा मान्य स्वरूप से भिन्न है। उक्त परम्पराओं में नग्न एवं पाणितलभोजी मुनियों को जिनकल्पी तथा वस्त्रपात्रधारी मुनियों को स्थविरकल्पी कहा गया है। किन्तु दिगम्बर-परम्परा में जिनकल्पी और स्थविरकल्पी, दोनों प्रकार के मुनि नग्न एवं पाणितलभोजी होते हैं। अन्तर केवल तप में है। इनके स्वरूप का वर्णन द्वितीय एवं चतुर्दश अध्याय में किया जा चुका है।[४] यहाँ त्वरित प्रमाण के लिए **वामदेवरचित भावसंग्रह** के निम्नलिखित श्लोक उद्धृत किये जा रहे हैं—

अथैतत्कथ्यते वृत्तं जिनकल्पाभिधानकम्।
यस्मान्मुक्तिवधूसङ्गो भव्यानां जायते ध्रुवम्॥ २६३॥

अनुवाद—"अब इस जिनकल्प नामक चारित्र का कथन किया जा रहा है, जिससे भव्यों का मुक्तिवधू के साथ निश्चितरूप से संगम होता है।"

अन्ये स्थविरकल्पस्था यतयो जिनलिङ्गिनः।
सम्यक्त्वामल-दुग्धाम्बु-निमग्नीकृत-चेतसः॥ २७०॥

अनुवाद—"जो अन्य स्थविरकल्पी जिनलिङ्गी मुनि हैं, उनका चित्त सम्यक्त्वरूपी निर्मल दुग्धाम्बु में डूबा रहता है।"

आचार्य देवसेन ने भी अपने प्राकृत भावसंग्रह में जिनकल्प और स्थविरकल्प के स्वरूप का वर्णन किया है, जिसका उल्लेख श्वेताम्बरमुनि कल्याणविजय जी द्वारा अपने 'श्रमण भगवान् महावीर' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ (पृष्ठ २८६-२८९) में किया गया है।

भगवती-आराधना में भी जिनकल्प का निर्देश है।[५] उपर्युक्त यापनीयपक्षधर ग्रन्थलेखक ने उसे यापनीयग्रन्थ कहा है, किन्तु यह सर्वथा मिथ्या है। वह विशुद्ध दिगम्बरग्रन्थ है, यह पूर्व में विस्तार से सप्रमाण सिद्ध किया जा चुका है। इसका एक ज्वलन्त प्रमाण यह है कि उसकी अपराजितसूरि-कृत विजयोदयाटीका में जिनकल्पी और स्थविरकल्पी (जिनकल्प में असमर्थ, किन्तु परिहारसंयम में समर्थ), दोनों प्रकार के मुनियों को जिनलिंगधारी (नग्न) कहा गया है।[६]

---

४. देखिये, अध्याय २ / प्रकरण ३ / शीर्षक ३.२ एवं अध्याय १४ / प्रकरण २ / शीर्षक ८।
५. किण्णु अधालंदविधी भत्तपइण्णेंगिणी य परिहारो।
पादोवगमण-जिणकप्पियं च विहरामि पडिवण्णो॥ १५७॥ भगवती-आराधना।
६. देखिये, उपर्युक्त पादटिप्पणी ४।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

इस प्रकार दिगम्बर-परम्परा में भी जिनकल्प और स्थविरकल्प का विधान है, इसलिए उपर्युक्त ग्रन्थलेखक का प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र को यापनीयग्रन्थ सिद्ध करनेवाला यह हेतु कि दिगम्बरपरम्परा में जिनकल्प और स्थविरकल्प की मान्यता नहीं है, मिथ्या (स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास) सिद्ध हो जाता है। अतः उसके आधार पर बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र को यापनीयग्रन्थ कहना भी मिथ्या सिद्ध हो जाता है।

किन्तु बृहत्प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र को 'जिनकल्पिसूत्र' संज्ञा जिनलिंगधारी मुनि-सामान्य के आचार की अपेक्षा से दी है, दूसरे शब्दों में श्वेताम्बरमान्य वस्त्रपात्रमय स्थविरकल्प के प्रतिपक्षी जिनकल्प की अपेक्षा से दी है। इसका विशेष प्रयोजन है। तत्त्वार्थाधिगमभाष्यकार एवं उत्तरवर्ती श्वेताम्बराचार्य सिद्धसेनगणी, हरिभद्रसूरि आदि ने उमास्वामी-कृत तत्त्वार्थसूत्र को श्वेताम्बर-कृति सिद्ध करने की अर्थात् उसमें स्थविर-कल्प (वस्त्रपात्रधारी साधुओं के आचार) का प्रतिपादन साबित करने की चेष्टा की है। अतः बृहत्प्रभाचन्द्र ने इसका खण्डन करने के लिए उक्त तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर रचित अपने तत्त्वार्थसूत्र को **जिनकल्पिसूत्र** (जिनलिंगधारी मुनियों के आचार का वर्णन करनेवाला सूत्र) नाम दिया है। श्वेताम्बरसम्प्रदाय में दिगम्बरसाधु जिनकल्पी नाम से प्रसिद्ध हैं। श्वेताम्बरग्रन्थ **शतपदी** के कर्त्ता **महेन्द्रसूरि** ने अपने समय (विक्रम सं० १२९४) के दिगम्बर साधुओं के आचरण की आलोचना की है। उसमें उनके लिए **जिनकल्पानुकारी** विशेषण प्रयुक्त किया गया है।[७] अतः उपर्युक्त दृष्टि से बृहत्प्रभाचन्द्र द्वारा अपने ग्रन्थ को 'जिनकल्पिसूत्र' नाम दिया जाना युक्तिसंगत है। उनके द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र में जिनकल्प (दिगम्बर मुनियों के आचार) का ही निरूपण है, इसकी पुष्टि के लिए सूत्रकार बृहत्प्रभाचन्द्र ने एक नये सूत्र का भी समावेश किया है, वह है '**श्रमणानामष्टाविंशतिर्मूलगुणाः**' (७/५) अर्थात् श्रमणों के २८ मूलगुण होते हैं। श्रमणों के २८ मूलगुणों में एक **अचेलत्व** मूलगुण भी है, जो यापनीयमत में संभव नहीं है, क्योंकि उसमें अपवादरूप से वस्त्रधारण करनेवाला भी मुनि कहला सकता है और उस मत के अनुसार वह मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। स्वयं यापनीय-आचार्य शाकटायन ने अचेलत्व (नग्नत्व) को मुनि का मूलगुण मानने से इनकार किया है।[८] इससे स्पष्ट हो जाता है कि बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र में दिगम्बर मुनियों के ही आचार का वर्णन है।

---

७. देखिये, अध्याय ८/ प्रकरण ४/ शीर्षक ३ 'पासत्थादि मुनियों के वस्त्रधारण से १२वीं शती ई० में भट्टारकपरम्परा का उदय।'

८. देखिये, अध्याय १५/ प्रकरण १/शीर्षक २ 'यापनीय-अमान्य २८ मूलगुणों का विधान।'

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

२

यापनीयमत में जिनकल्प पर विशेष बल नहीं

प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र को यापनीयकृति माननेवाले उपर्युक्त विद्वान् का कथन है कि "इसके अन्त में दिया गया **जिनकल्पिसूत्र** विशेषण इसके यापनीय होने का प्रमाण दे देता है, क्योंकि यापनीय श्वेताम्बरों के समान स्थविरकल्प और जिनकल्प दोनों को मान्य करके भी जिनकल्प पर विशेष बल देते हैं।" (जै.ध.या.स./पृ. २०७)।

यहाँ "यापनीय जिनकल्प पर विशेष बल देते हैं," ये वचन सत्य नहीं हैं, क्योंकि यापनीयमत में जिनकल्प पर विशेष बल तो तब दिया जाता, जब उसमें जिनकल्प से ही मुक्ति मानी जाती, स्थविरकल्प से नहीं, अथवा यह माना जाता कि जिनकल्प से शीघ्र मोक्ष होता है और स्थविरकल्प के द्वारा देर से। किन्तु ऐसी मान्यता तो यापनीय मत में है ही नहीं। उसमें तो यह माना गया है कि **योगचिकित्साविधि-न्याय** से किसी को जिनकल्प से मुक्ति प्राप्त हो सकती है, किसी को स्थविरकल्प से। यापनीय आचार्य **पाल्यकीर्ति शाकटायन** ने इसका विस्तार से प्रतिपादन अपने **स्त्रीनिर्वाणप्रकरण** नाम के लघुकाय ग्रन्थ में किया है। इसमें उन्होंने एकान्ततः जिनकल्प से मुक्ति माननेवाले दिगम्बरमत का खण्डन करने का प्रयास और स्थविरकल्प की मोक्षहेतुता का जोरदार समर्थन किया है। **मूलाचार** के अध्याय में शाकटायन के वचनों को उद्धृत करते हुए इसका विस्तार से निरूपण किया गया है।[९] अतः यापनीयमत में जिनकल्प पर विशेषबल दिये जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सच तो यह है कि यापनीय आचार्य शाकाटायन ने 'स्त्रीनिर्वाणप्रकरण' और 'केवलिभुक्तिप्रकरण' लिखकर जिनकल्प को गौण करने और स्थविरकल्प पर बल देने का प्रयत्न किया है। अतः 'बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र का **जिनकल्पी** विशेषण उसके यापनीयग्रन्थ होने का सूचक है,' यह कथन केवल स्वाभीष्टमत का आरोपण है।

जैसा कि पूर्व में संकेत किया गया है, बृहत्प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र को **जिन-कल्पिसूत्र** संज्ञा देकर यह स्पष्ट किया है कि तत्त्वार्थसूत्र केवल जिनकल्प अर्थात् नाग्न्यलिंग से मुक्ति का प्रतिपादक ग्रन्थ है, सचेललिंग से मुक्ति का प्रतिपादक नहीं है।

३

केवलिभुक्ति-भ्रम-परिहारार्थ परीषहसूत्रों का अनुल्लेख

प्रस्तुत ग्रन्थ में एक महत्त्वपूर्ण बात और ध्यान देने योग्य है। इसमें उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र में वर्णित परीषहसूत्रों को स्थान नहीं दिया गया है, क्योंकि उनमें **एकादश जिने** सूत्र है, जिसे श्वेताम्बराचार्यों ने केवलि-कवलाहार का प्रतिपादक बतलाकर

९. देखिये, अध्याय १५/ प्रकरण १/शीर्षक २ 'यापनीय-अमान्य २८ मूलगुणों का विधान' एवं शीर्षक २.१. 'योगचिकित्साविधि-न्याय कर्मसिद्धान्त के प्रतिकूल।'

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र को श्वेताम्बर-परम्परा का ग्रन्थ सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इससे सिद्ध होता है कि बृहत्प्रभाचन्द्र दिगम्बर थे। यदि वे यापनीय होते, तो अपने तत्त्वार्थसूत्र में परीषहसूत्रों को अवश्य रखते, क्योंकि 'एकादश जिने' सूत्र के आधार पर वे श्वेताम्बरों के समान केवली को कवलाहारी सिद्ध कर सकते थे।

४

आचार्य अमृतचन्द्र का अनुसरण

बृहत्प्रभाचन्द्र ने उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र के "**गुणपर्ययवद् द्रव्यम्**" सूत्र में "**सहक्रमभावि-गुणपर्ययवद् द्रव्यम्**" (५/८) इस प्रकार **सहक्रमभावि** विशेषण जोड़ा है। यह विशेषण उन्होंने **पञ्चास्तिकाय** (गाथा ९) की अमृतचन्द्रकृत टीका में प्रयुक्त "**तांस्तान् क्रमभुवः सहभुवश्च सद्भावपर्यायान्**" इस वाक्यांश से ग्रहण किया है। यह उनके दिगम्बर होने का सूचक है।

५

भाववेदत्रय की स्वीकृति

बृहत्प्रभाचन्द्र ने "**उत्तरा अष्टचत्वारिंशच्छतम्**" (८/४) सूत्र द्वारा कर्मों की १४८ उत्तरप्रकृतियाँ स्वीकार की हैं, जिनमें पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद ये तीन भाववेद भी हैं। यापनीयमत में ऐसे अलग-अलग तीन वेद स्वीकार न कर एक वेदसामान्य ही स्वीकार किया गया है।[१०] इससे भी सिद्ध होता है बृहत्प्रभाचन्द्र दिगम्बर ही हैं, यापनीय नहीं।

यापनीय-आचार्य पाल्यकीर्तिशाकटायन ने अपने ग्रन्थ **स्त्रीनिर्वाणप्रकरण** में स्वयं के लिए **यापनीय-यतिग्रामाग्रणी** विशेषण का प्रयोग कर अपना सम्प्रदाय सूचित किया है। यदि तत्त्वार्थसूत्रकार बृहत्प्रभाचन्द्र भी यापनीय होते, तो वे भी अपने नाम के साथ इसी विशेषण का प्रयोग करते। किन्तु, नहीं किया, इससे भी सिद्ध होता है कि वे यापनीय नहीं, अपितु दिगम्बर हैं।

६

'दशसूत्र' शब्द का प्रयोग

इसके अतिरिक्त बृहत्प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र को दशाध्यायी होने के कारण **दशसूत्र** नाम भी दिया है और 'जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय' ग्रन्थ के लेखक ने पृष्ठ २०६ पर स्वयं स्वीकार किया है कि "दिगम्बर-परम्परा में उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र को भी 'दशसूत्र' कहा जाता है।" यह साम्य भी बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र के दिगम्बरीय होने का अतिरिक्त प्रमाण है।

---

१०. देखिए, अध्याय ११/प्रकरण ४/ शीर्षक ९ 'षट्खण्डागम का भाववेदत्रय यापनीयों को अमान्य।'

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

शब्दविशेष-सूची

तृतीयखण्डान्तर्गत त्रयोदश अध्याय से लेकर पञ्चविंश अध्याय तक आये विशिष्ट शब्दों (व्यक्तियों, स्थानों, ग्रन्थों, लेखों, अभिलेखों, कथाओं, सम्प्रदायों, गणगच्छों इत्यादि के वाचक तथा पारिभाषिक शब्दों) की सूची नीचे दी जा रही है। इसमें पादटिप्पणीगत शब्द भी समाविष्ट हैं। दो पृष्ठाकों के बीच में प्रयुक्त योजक-चिह्न (-) बीच के पृष्ठों का सूचक है।

अ

अकलङ्कग्रन्थत्रय ५४१, ५४३
अकलङ्कदेव (भट्ट) ३४७, ४९४, ५०६, ५०७, ५५५, ५७९, ५८२, ५९५, ५९६, ६२६
अकलंकचरित ४९७
अखिल भारतवर्षीय प्राच्य सम्मेलन, १२वाँ अधिवेशन बनारस, (जनवरी १९४४) ५५७
अग्रधर्म (मुनिधर्म) ६४०
अचेलत्व, (ता) ७८९
अचेलपरीषह ४०८
अचेलव्रतभंग के प्रायश्चित्त ७६६, ७७७
अणुधर्म (श्रावकधर्म) ६४०
अतिवीर्य राजा ६३५
अथालन्दक, अथालन्दिक, यथालन्दिक मुनि १७५
अथालन्दसंयम (श्वेताम्बरमतानुसार) १७५, १७६, १७७-१८१
अथालन्दसंयम (दिगम्बरमतानुसार) १७७-१८१
अदर्शनपरीषह ४०८
अदिगम्बरीय मान्यताएँ ७३०
अद्धासमय (काल) ३२२, ३८६, ३८७, ४४८
अनगारधर्म २८४
अनगारधर्मामृत (पं० आशाधर) २२०, ३३४
अनवद्या (भ० महावीर की पुत्री—श्वे०) ६६६
अनस्तमित भोजन (अन्थउ) ७३०
अनाहारक २९१, २९५
अनुत्तरवाग्मी कीर्ति ६४६, ६४७
अनुदिश (स्वर्ग ९) २१८, ४४५, ६९३
अनुयोग (चार)—दिग. एवं श्वे. मतों के अनुसार १३९, ६४३
अनुयोग (निरूपणद्वार) १००
अनुयोगद्वारसूत्र ५, ३९१-३९५, ४०७
अनेकान्तजयपताका ५०४
अनेकान्त (मासिक पत्र) ५८, ६५, ८०, ८५, ८६, ९१, १९६, ३२४, ३७०, ४१९, ४४५, ५०९, ५४०, ५५७, ५६५, ५६६, ५६८, ५७०-५७३, ५७६,

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

५७७, ५७९, ५८२, ५८६, ५८८-५९०,५९३-५९५,६०३,६०५-६०७, ६०९-६१३, ६१५, ६१६
अनेकाम्बरसंवीता (श्वेताम्बर आर्यिका) ७०९
अन्तरद्वीप ४२५, ४४५, ४४६, ६९५
अन्ध-पंगुकथा ६७८
अन्धलक-घोटक-न्याय २३७
अन्यतीर्थिक (अन्यधर्मावलम्बी) ७६६
अन्यलिंगिमुक्ति-निषेध (देखिये, परतीर्थिक-मुक्ति-निषेध)
अपदान (बौद्धग्रन्थ) ४१६
अपराजितसूरि (विजयोदयाटीकाकार) ४, ११, १६-१८, २०-२४, २७, ६३, १०४,१०८-११२,११५-१४६,१४८, १४९,१५३-१७५,१८०-१८६,१८८, १८९, ४२३-४२५
अपराजित स्वर्ग ४३८
अपरिग्रह २८५
अपरिग्रहमहाव्रत-भंग के प्रायश्चित्त ७६७
अपरिग्रह-महाव्रत में वस्त्रग्रहण का निषेध ७७९, ७८१
अपवाद (परिग्रह) ९, १४१
अपवाद (आपवादिक) लिंग—
१. भ्रष्ट दिगम्बरजैन मुनि का अस्थायी सचेललिंग १६५, १६६
२. श्रावक का सवस्त्रलिंग ८-२४, १४१-१५४
३. श्राविका का बहुवस्त्रात्मकलिंग ११-१३
४. मुनि के लिए अपवाद (निन्दा) का कारणभूत लिंग ८, १९
५. गृहिभावसूचकलिंग ९
६. मुक्ति के लिए त्याज्यलिंग १०
७. यापनीय मुनि का सचेललिंग २०४-२०६, ६५९
अपवाद और विकल्प में भेद १४७
अपायानुप्रेक्षा ४०६
अभयदेव सूरि (सन्मतिसूत्रटीकाकार) ४७३, ४८३, ४९७
अभिग्रहविधान ५४
अभिधानचिन्तामणि (हेमचन्द्र) ७२६
अभिधान राजेन्द्र कोष १७६, २४०, २५५
अभिनवधर्मभूषण यति ४५८, ६७६
अभेदवाद (एकोपयोगवाद) : (देखिये, केवलि-उपयोगद्वय)
अभ्यन्तर परिग्रह ३९, ३२
अभ्युपगमवाद ४८५
अभ्रावकाशयोग ६५७, ६६१
अमरचन्द्र दीवान ७७, ८०
अमितगति आचार्य ३, ५६
अमितसेन (पुन्नाटसंघाग्रणी) ७००
अमितास्रव मुनि ७३६
अमृतचन्द्र आचार्य ७९१
अमोघवृत्ति (पाल्यकीर्ति शाकटायन) ६१
अयाचनापरीषहजय (श्वे०) २७५, २७६
अर्धफालक (वस्त्र का आधा टुकड़ा) ७५३, ७५४, ७६१
अर्धफालक (साधु, संघ, सम्प्रदाय) ७४६, ७५३, ७६०
अर्धमागधी १९७, ४५१
अर्हन्मुनि (रविषेण के दादा गुरु) ६४५
अलङ्कारचिन्तामणि ५१७

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

अल्पचेलत्व २००
अवचूरि (श्वे. ग्रन्थ) ५१८
अवमौदर्य कष्ट ४
अवर्णवाद १६८, १६९, ३४७
अवसान (वस्त्ररहित) १७७
अविकारवत्थवेसा (आर्यिका) २८३
अविनीत (गंगवंशी राजा) ५१०
अशोकरोहिणी-कथानक (बृ.क.को.) ७३५, ७३६, ७३८, ७४०, ७४३-७४६, ७४९, ७५७, ७५८
अशोक-स्तम्भलेख ४१५
अष्टशती (अकलंकदेव) ४८४, ५६४, ५९१
अष्टसहस्री (विद्यानन्द स्वामी) ५४३, ५४४, ५६४, ५६५, ५७१, ५७२
असत्यभाषण-कथानक (बृ.क.को.) ७४०
अस्पर्शयोग ६६१
आगमविच्छेद ४४३, ४६३
आगमविच्छेद श्वेताम्बरपरम्परा में भी ४६३
आचार (चरण = आचरण) ९७
आचारजीत (आचार का क्रम) ९८
आचार, जीतकल्प ९५, २३८
आचारप्रणिधि (श्वे. दशवैकालिकसूत्र का अध्ययन ८) १२५, १५६
आचारसार (वीरनन्दी) २२०
आचारांग ४५, ५२, ७०, २६३, २६४, २६७, २६९, २८३, २८४, ६६६
— शीलांकाचार्यवृत्ति २५९
आचार्यपरम्परा (दिगम्बरमतानुसार) ४४२
आचार्यपरम्परा (श्वेताम्बरमतानुसार) ४४२
आचेलक्य ६, ७, ७४, १९८-२०२, ७६६, ७६७, ७७६, ७८२
आतापनयोग ६६१
आतुरप्रत्याख्यान, आउरपच्चक्खाण (वीरभद्र) ६६, ६८-७२
आत्माराम (उपाध्याय, श्वे. मुनि) ३९०
आदिपुराण १७३, ४५३, ६८१
आदिब्रह्मा ऋषभदेव ६८१
आपुलीसंघीय ७१७, ७१८
आप्तपरीक्षा (विद्यानन्द स्वामी) ३७५, ३७६, ५४२-५४४
आप्तमीमांसा (देवागम स्तोत्र) ४५४, ४८४, ५४३, ५४४, ५४७-५५०, ५५६-५६०, ५६३, ५६४, ५६९-५७२, ५७५, ५७७, ५७८, ५८२, ५८३-५८६, ५९३, ६०३-६०८, ६१४, ६१५
आरणाच्युतस्वर्ग ६४१
आराधनाकथाकोश (नेमिदत्त) ७०१
आराधनाकथाकोश (प्रभाचन्द्र) ७०१
आराधनानिर्युक्ति २३९
आराधनानिर्युक्ति (भगवती-आराधनागत) २४१
आराधनापञ्जिका (भगवती-आराधना की टीका) ५६
आराधनापताका (श्वे. ग्रन्थ) ६९
आर्यमंक्षु-नागहस्ती (दिगम्बर) ४५७
आर्यमंगु-आर्यनागहस्ती (श्वे.) ५१९
आर्या (आर्यिका) : २२३, ७५७
आर्यान्त नाम ५, ६२
आर्यिका ६३४, ७५६
आर्षमत ३८८
आलोचना ७७७

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

आवश्यकनिर्युक्ति (भद्रबाहु-द्वितीय, श्वे.) ७०, १३९, २४४, ४९८, ६२५
आवश्यकनिर्युक्ति (मूलाचारगत) २४०
आवश्यक (प्रतिक्रमणसूत्र) ७७७
आवश्यकसूत्र ५, १००, ४०४
आशाधर (पण्डित) ३, १०५, १०७-११२, ६०८
आहार २९१, २९४
आहारक २९१
आहारदानविधि ६४३, ६४९, ७५९
आहारसंज्ञा २९५

इ

इच्छाकार ६३८, ७५५
इच्छापरिमाणव्रत २८७
इच्छामि ७४०
इत्सिंग (चीनी यात्री) ५०३
इन्द्र (रविषेण के गुरुओं के गुरु) ६४५
इन्द्र (छेदपिण्डकार) ७६९
इन्द्रगुरु (श्वेताम्बर गुरु) ६४५
इन्द्रदिन्न सूरि ५१९
इन्द्रनन्दी (गोम्मटसार के कर्त्ता आ० नेमिचन्द्र के गुरु) ७६९
इन्द्रभूति गौतम : (गणधर) ६४६, ६४७, ७१७
इसिभासिय (ऋषिभाषित) ७६, २५७

उ

उच्चनागर शाखा २८९, ३५१, ४१३
उज्जयिनी-महाकालमन्दिर-रुद्रलिंग ५१९
उत्कालिक ४०७
उत्तरगुण ४९, १९९, २९०
उत्तरपुराण (गुणभद्र) ७३०
उत्तरभारतीय-सचेलाचेल-निर्ग्रन्थसंघ (परम्परा, सम्प्रदाय) २५३, ४१२, ४१३, ४५७, ६२५, ६२६
उत्तराध्ययन-निर्युक्ति (भद्रबाहु-द्वितीय, श्वे०) ४९८
उत्तराध्ययनसूत्र ७५, ७६, १६१, १६२, २५६, ३९३, ३९५, ४००, ४०१, ४०५, ४०६
उत्सर्ग (औत्सर्गिक) लिंग
— मुनियों का अचेललिंग उत्सर्ग लिंग ८, ९, १४, १०४, १४६
— आर्यिकाओं का एकवस्त्रात्मक-लिंग उत्सर्गलिंग ११, १२, १०४
— गृहस्थ से भिन्नत्व-ज्ञापक लिंग उत्सर्गलिंग १०
— शुद्धोपयोग उत्सर्ग, शुभोपयोग अपवाद १५२
— उत्सर्गसापेक्ष अपवाद, अपवाद-सापेक्ष उत्सर्ग १५२, १५३
उद्यापन ७४९
उद्योतनसूरि (श्वे०) ६४८
उपचरित नग्न २७१, २७३
उपचार नाग्न्य २७१, २७२
उपचार-नाग्न्यपरीषह २७३
उपचार-निर्जरा २७३
उपचार-नैर्ग्रन्थ्य (आर्यिकाओं में) १०५
उपचारमोक्ष २७३
उपचारसंवर २७३
उपदेशतरङ्गिणी (हरिभद्रसूरि) २५६
उपवास प्रायश्चित्त ७७७

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

उमास्वाति २५३, २५४, २८९, ३२५, ३२९, ३७३, ३७५, ३७७-३८१, ४२५, ५४२, ५४३
उमास्वामी (उमाप्रभु) ३७६, ३७७, ३७९-३८९
उपासकाध्ययन (यशस्तिलकचम्पू के अन्तर्गत) ६०२
उपकप्पेंति (उपकल्पयन्ति) ७८, ७९
ऋषभ (देव) ६४९
ऋषिभाषित (देखिये, 'इसिभासिय')

ए

एकान्त-अचेलमार्गी-समान-आचार्यपरम्परा ६६
एकान्त-अचेलमुक्तिवाद १६७
एकान्त (ऐकान्तिक) अचेलमुक्तिवादी (अचेलमार्गी) निर्ग्रन्थसंघ (मूलसंघ, दिगम्बरपरम्परा) ६७
एकाम्बरसंवीता (एकवस्त्रधारिणी = आर्यिका) ७०९
एकोरुक द्वीप ४२५
एकोरुक मनुष्य ४२५
ए० एन० उपाध्ये (आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये) ६५, १९४, १९६, ४२२, ६१७-६२०
एलक ७७५
एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता ४७५
एषणाएँ (श्वे० साधुओं के लिए विहित) - पिण्डैषणा, शय्यैषणा, वस्त्रैषणा, पात्रैषणा, अवग्रहैषणा २७५
एषणीय वस्त्रधारण २७२

औ

औदार्यचिन्तामणि (व्याकरणग्रन्थ) ३७९

क

कटकाभरण जिनालय ६२४
कण्ठ (वैदिक ऋषि) ६८०
कण्डूर् (काण्डूर, काडूर) गण १७३, ७६८, ७८३
कथावतार की दिगम्बरपद्धति ६४३, ७१७, ७१८
कमठ ६८०
करकंडुचरिउ (कनकामर मुनि) ५१७
करञ्जजालिका (पिच्छी) ६३८
करण (षडावश्यक) ९७
कर्कण्ड-महाराज-कथानक (बृ.क.को.) ७५१
कर्णामृतपुराण ४७१
कर्नाटक (कर्णाटक) ६२०, ६२४
कर्मणा वर्णव्यवस्था ६८०, ६८१
कल्प ('कल्प' नामक स्वर्ग) ६४३, ६८०, ६९३, ७१९
कल्प (साधुओं का आचार) ६, ९७
कल्पसंख्या २१७, ४४४
कल्पनिर्युक्ति (कल्पसूत्रनिर्युक्ति) ७८
कल्पव्यवहारधारी (कप्पववहारधारी) ९९
कल्पसूत्र ४५, ५०-५२, ७०, १३९
— कल्पकौमुदीटीका ९६
— कल्पप्रदीपिकावृत्ति ९७
— स्थविरावली (थेरावली) ५१८
कल्प्यगुण (योग्य गुण) ९८
कल्याणकारक (वैद्यक ग्रन्थ) ४७१
कल्याणमन्दिर (ग्रन्थ) ४७२
कल्याणमन्दिर स्तोत्र (कुमुदचन्द्राचार्य) ४७२, ४८१, ५१९

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

कल्याणविजय (श्वे० मुनि) ३
कवलाहार, कवलाहारी २९५
कसायपाहुड (कषायप्राभृत भाग १२) २१६
— चूर्णिसूत्र ४५६, ४५७
— प्रस्तावना (भा.१) ४३१
काठियाबाड़ ७०१
काणूर (क्राणूर) गण १७२, १७३, ६७५, ७८३
कापालिक (सरजस्क) २५९
काम्बलतीर्थ, काम्बलिकतीर्थ (श्वेताम्बर सम्प्रदाय) ७६०, ७६२
कार्त्तिकेयानुप्रक्षा ७४१
कालकसूरि आर्यरवपुट्टाचार्य ५१९
कालद्रव्य ६९४
कित्तूर (कीर्तिपुर, पुन्नाटदेश की पुरानी राजधानी) ७००
कित्तूरसंघ ७००
किमिच्छ, किमिच्छक दान ६७०
कुतीर्थलिंगी ७५९
कुन्दकुन्द आचार्य ५५, २४५, २७४, ४५५, ५४६, ५८२, ६००, ६०६, ६२०, ६७७
कुप्य (वस्त्र) ३२
कुभोगभूमियाँ ४४६
कुमानुष ४४६
कुमानुषद्वीप ४४६
कुमुदचन्द्र (कुमुदचन्द्राचार्य) ४७२
कुवलयमाला (उद्योतनसूरि, श्वे०) ६४८
कुसुम पटोरिया (डॉ० श्रीमती) ३, ११५, १६८, १६९, १९७, ६२०, ६२१, ६२३, ६२४, ६२९, ६४५, ६५६, ६८७, ७०२, ७१७, ७२१
कूर्चक (एक जैन सम्प्रदाय) ३७०, ३८१
कृतिकर्म ६
कृष्ण ६४९, ६५१, ७१२
कृष्ण की आठ पट्टरानियों की आर्यिकादीक्षा ६८९, ७१०
केवलि-उपयोगद्वय
— क्रमवाद, क्रमपक्ष ४८४, ४८५, ४९७, ४९८, ५०६, ५२६, ६१८, ६२५
— युगपद्वाद, यौगपद्यवाद, युगपत्पक्ष ४८४, ४८५, ४८६, ४९८, ५०१-५०३, ५०६, ५०७, ५२५, ५२६
— अभेदवाद, अभेदपक्ष, एकोपयोगवाद ४८२, ४८६, ४९६, ५०१, ५०६, ५२६, ५२७, ६१८
— अभेदवाद-पुरस्कर्त्ता : सन्मतिसूत्रकार सिद्धसेन ४८२, ४८३, ४९६, ५०६
केवलिभुक्ति (कवलाहार) १६८
केवलिभुक्तिनिषेध ३०, १३७, २८९, २९८, ४४१, ६५५, ६५६, ६९२
केवलिभुक्तिप्रकरण (पाल्यकीर्तिशाकटायन) ४६२
केवलिभुक्तिभ्रम-परिहार ७९०
कैकेयी ६४२
कैलाशचन्द्र शास्त्री (पं०) ८०, ९२, ९४, ११२, १७१, १९४, १९५, ३३५, ४३१
कैलाशचन्द्र शास्त्री (सिद्धान्ताचार्य, पं०) अभिनन्दन ग्रन्थ ३४७, ३५०
कोटिमडुवगण (यापनीयसंघ) ६२४

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

कोप्पल (यापनीयों का मुख्य पीठ) ६७६
कौण्डिन्यगोत्रीया (भगवान् महावीर की पत्नी यशोदा, श्वे०) ६६६
क्या निर्युक्तिकार भद्रबाहु और स्वामी समन्तभद्र एक हैं? (लेख—पं० दरबारीलाल जैन कोठिया) ५७७, ६११
क्या रत्नकरण्डश्रावकाचार स्वामी समन्त-भद्र की कृति नहीं है? (लेख—पं० दरबारीलाल जैन कोठिया) ५५७, ६०५, ६१३
क्राणूर् (काणूर्) गण (दिगम्बरसंघ) ७६८
क्षतत्राण ६८१
क्षत्रिय ६८१
क्षुल्लक ६३७, ६३८, ७४०, ७४५, ७४६, ७५४-७५६, ७७५
क्षुल्लकधर्म ७५६
क्षुल्लिका ७४१, ७५६, ७५७
क्षौल्लकधर्म ७४६

ख

खण्डलक ब्राह्मण १६०
खण्डश्री-कथानक (बृ. क. को.) ७५१, ७५४, ७५५
खमण (क्षपण, क्षपणक) : देखिये 'क्षपण'।
खमण (उपवास) प्रायश्चित्त ७६६
ख-वासस् (दिगम्बर) ६३१
खुड्डक, खुड्डग (क्षुल्लक = नवदीक्षित युवा साधु—श्वे०) ७७५

ग

गजकुमार-कथानक (बृ.क.को.) ७५१, ७५८
गणधर (आचार्य) २२९
गणी ४५९, ४६०
गुणकर्माश्रित वर्णव्यवस्था ६८२
गुणभद्र (आचार्य) ६४७, ६४९
गुणस्थान ७२५
गुणस्थानविकासवाद (वादी) ६९
गुणस्थानसिद्धान्त ६९५
गुरुपरम्परा से प्राप्त दि० जैन आगम : एक इतिहास २३
गृध्रपिच्छ (आचार्य, तत्त्वार्थसूत्रकार) ३७५, ३७८, ३७९, ४१८
गृहस्थ ६३२
गृहस्थ (गृहलिंगी)-मुक्तिनिषेध २९, १२८, २६१, ६३९, ६८९, ७४४, ७५८, ७८३
गृहस्थमुनि (क्षुल्लक) ६३९
गोम्मटसार कर्मकाण्ड २९३
— जीवकाण्ड २९१
— जीवतत्त्वप्रदीपिकाटीका १८७
गोवर्धन (श्रुतकेवली) ७६०
गौतम स्वामी ६३५, ६४१, ७७७

च

चउसरण (चतुःशरण—श्वे० ग्रन्थ) ६९
चक्ररथ चक्रवर्ती (सीता का जीव) ६४२
चतुर्दशपूर्वी, चतुर्दशपूर्वधर (श्रुतकेवली) ४९९, ७६१
चन्द्रनन्दी आचार्य (यापनीय) १७०
चन्द्रनन्दी महाप्रकृत्याचार्य (दिगम्बर) १६९
चरण (गुप्ति-समिति) ९७
चरमदेहोत्तमपुरुष ३१९
चरमोत्तमदेह ३१९
चातुर्वर्ण श्रमणसंघ २२९

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

चामुण्डरायपुराण (त्रिषष्टिलक्षण महापुराण) ६४७
चारित्तपाहुड २४५, ४०२, ४०३, ४०५
चारित्रसार (चामुण्डराय) २२०, ६०२
चेल (परिग्रह का उपलक्षण, देशामर्शकसूत्र) ७
चेलोपसृष्ट मुनि (सामायिकरत श्रावक)५९१
चैत्यभक्ति ५३
चैत्यवास, वनवास ६०१
चैत्यवासी मुनि, वनवासी मुनि ६०१
चौंतीस अतिशय ७२९
चौदहपूर्वी ४४३

छ

छलवाद ६५६, ६५८, ६६२, ६८२
छेदपिण्ड (छेदपिण्डप्रायश्चित्त) ७६५-७७६
छेदशास्त्र ७६५, ७७६, ७७७
छेदसुत्त ७८४

ज

जटासिंहनन्दी (जाटिल मुनि) १७२, ४४४, ६४८, ६५५-६५८, ६५९, ६६३, ६६८, ६७१, ६७२, ६७४-६८१
जन्नकवि (कन्नड़) १७२
जन्मना वर्णव्यवस्था ६८०
जम्बूविजय (श्वे० मुनि) ५०३
जम्बूस्वामी ४४३, ६४७
जयधवलाटीका ३४१, ४४३, ४५१, ४७०, ७३७
जयन्त स्वर्ग ४३८
जयसेन आचार्य २२४
जातक (बौद्धग्रन्थ) ७५
जातरूप, जातरूपधर ६३४, ६६०, ६६१
जातस्वरूप ६३०, ६३१
जातिनामकर्मोदय से मनुष्यजाति का एकत्व ६८१
जितशत्रु (राजा सिद्धार्थ के भगिनीपति) ७०२
जिनकल्प (दिगम्बर अचेललिंग का श्वेताम्बराचार्यों एवं बृहत्प्रभाचन्द्राचार्य द्वारा किया गया नामकरण) ७८७, ७८९
जिनकल्पानुकारी (दिगम्बरमुनि) ७८९
जिनकल्पिसूत्र (बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र) ७८७, ७८९
जिनकल्प-स्थविरकल्प (दिगम्बरमान्य) १७६, १७७, ७८८, ७८९
जिनकल्प-स्थविरकल्प (श्वेताम्बरमान्य) ७६२
जिनदास पार्श्वनाथ शास्त्री फड़कुले (पं०) ९६, ११२
जिनप्रतिबिम्ब अचेललिंगधारी २०
जिनबिम्बप्रतिष्ठा ६७१, ६७४
जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण ६२५
जिनभाषित (जिनोपदिष्ट) ६३५
जिनविजय (श्वे० मुनि) ५०४
जिनशतक (समन्तभद्र) ५८८
जिनसेन आचार्य (हरिवंशपुराणकार) ६८७, ६९३, ६९५, ६९६, ६९९-७०२
जीत (अवश्य करने योग्य आचरण) ९७
जीतकल्प (करण = षडावश्यक) ९६, ९७
जीतकल्पचूर्णि-विषमपदव्याख्या (चन्द्रसूरि) ४६९, ६२०
जीतकल्पभाष्य (जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण) ७६, ७८, २३३

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

जुगलकिशोर मुख्तार (पं०) १९४, ४४४, ५३३, ५३४, ५३९, ५४०, ५५७, ६०७, ६२५
जुगुप्सा (लोकविहिता निन्दा) २७३
Gender And Salvation (Padmanabh S. Jaini) २०४, २०६
जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा (देवेन्द्रमुनि शास्त्री) ६९, ७०, ७८, २४१, २४४, ३९१
जैन इतिहास का एक विलुप्त अध्याय (लेख—प्रो० हीरालाल जैन) ५५७, ५५८, ५७६, ५७७, ५९३, ६०४, ६०५
जैन जगत् (मासिकपत्र) ५४१
जैन तत्त्व विद्या (मुनि प्रमाण सागर) ४४६
जैनदर्शन और प्रमाणशास्त्र परिशीलन (डॉ० दरबारीलाल कोठिया) ३५१
जैनधर्म का मौलिक इतिहास (आचार्य हस्तीमल)
— भाग १ > ७५९
— भाग २ > ७६१
जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय (डॉ० सागरमल जैन) ४, ४०, ५८, ६७, ७०, ७१, ९२, १४२, १४८, १४९, १६९, १७५, १८१, १८३, १९७, २१२, २३०, २३४, २४७, २५३, २८८, २८९, ३११, ३१८, ३४५, ३६८, ३७१, ३८३, ३८७, ३९१, ४०१, ४१३, ४१४, ४१७, ४३१, ४४४, ४५६-४६१, ४६३, ५३३-५३४, ५३६-५३९, ६१७, ६२४, ६२५, ६२९, ६३९, ६४४, ६५०, ६५५, ६५६, ६५९, ६६१-६६३, ६७०, ६७१, ६७४-६७७, ६७९-६८१, ६९९, ७०१, ७०२, ७०४, ७०७-७१०, ७१९-७२१, ७२४, ७३५, ७४४, ७५८, ७६०, ७६५, ७६९-७७२, ७७६-७७८, ७८७
जैनधर्म के प्रभावक आचार्य (श्वे० साध्वी संघमित्रा) ३७४, ६७९
जैनधर्म के सम्प्रदाय (डॉ० सुरेश सिसोदिया) ५५, २०९
जैनलिङ्ग (दिगम्बरमुद्रा) ६३६, ६३७
जैन शिलालेख संग्रह (मा.च.)
— भाग १ > ६२
— भाग २ > १६९
— भाग ३ > ४२०
जैन साहित्य और इतिहास (नाथूराम प्रेमी)
— प्रथम संस्करण ३, ५५, ६१, ६४, ८७, ९१, ९४-९६, १७०, १७१, ६०१, ७०१
— द्वितीय संस्करण १५, ८५, ९९, १०१, १५७, १९७, १९८, २३६, २३८, २३९, २४४, २४५, २४१, ३४३, ३७३, ३८२, ४१९, ४२३-४२५, ६२९, ६४५, ६४८, ७००, ७०१
जैन साहित्य और इतिहास पर विशद प्रकाश (प्रथम खण्ड, जुगलकिशोर मुख्तार) ३०७, ३१५, ३२६, ५५६, ५५९-५६४, ५६९, ५७५, ५७७-५७९, ५८२, ५८६, ५८७, ५८९, ५९२, ५९३, ५९५, ५९८, ६०२, ६०३
जैन साहित्य का इतिहास (पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री)
— पूर्वपीठिका १७१

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

— भाग २ ३१३, ३२१, ३३१, ३३६, ३८७, ३८८
जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास (मोहनलाल दुलीचंद देसाई) ५२९
जैनसिद्धान्त भास्कर (मासिक पत्र) ४६१, ५१६, ५४१, ५४२
जैनाभास (गोपुच्छक आदि पाँच) ५७
जैनेन्द्र व्याकरण (पूज्यपाद देवनन्दी) ५०१, ५०८, ५५६, ५८८, ६२६
जैनेन्द्री दीक्षा ७४५
जैमिनी (दार्शनिक) १६९
जोहरापुरकर (विद्याधर, डॉ०, प्रो०) ६९९
ज्ञाता-(ज्ञातृ)-धर्मकथांग ४२, ५२, ७१, ७५, २८८, ४०२, ४३६-४३८, ६६५, ६९४, ७८३
ज्ञानबिन्दु (उपाध्याय यशोविजय) ४८३
— प्रस्तावना (पं० सुखलाल संघवी) ४८०, ४८३-४८५, ४८८, ५०२, ५०८
ज्ञानार्णव ५९८
ज्येष्ठता का पालन (स्थितिकल्प) ६
ज्योतिप्रसाद जैन (डॉ०) १९३

ट

टालेमी (भूगोलवेत्ता) ७००
टुची (Tousi) प्रोफेसर ४९४

ड

डॉ० सागरमल जैन अभिनन्दन ग्रन्थ ६९, ७२, ११५, २५६, ६२९

त

तत्त्वसंग्रह (शान्तरक्षित, बौद्ध) ४९३
तत्त्वसंग्रहटीका (कमलशील, बौद्ध) ४९३
तत्त्वार्थ (तत्त्वार्थसूत्र) १८, ७०, २५३-२५५, २५७, २५८, २६०-२६३, २६६, २७१, २७२, २७८, २७९, २८२, २८६-२९२, २९४, २९९, ३०३, ३१८, ३२०, ३२२, ३२५, ३२८, ३३४, ३३७, ३६५, ३६६-३७२, ३७४-३८४, ३८६-४१२, ४१७-४१९, ४२३, ४२५-४२७
तत्त्वार्थकर्तृ-तन्मतनिर्णय (श्वेताम्बर मुनि सागरानन्द सूरीश्वर) ३९३, ३९४
तत्त्वार्थभाष्यवृत्ति (सिद्धसेनगणी) २५६, २७१, २७३, २७९, ३०३, ३१२, ३१५, ३१७, ३२०-३२२, ३२९, ३३०, ३३२, ३३४, ३४२, ३४४, ३८५, ३८६, ४२३, ४४६
तत्त्वार्थराजवार्तिक (तत्त्वार्थवार्तिक) १७२, १७४, २५७, २६१, २७६, ३१३, ३३२, ३३३, ३४१, ३४७-३५०, ४९७, ५५५, ५७९, ६१५, ६२६, ६९७
तत्त्वार्थवृत्ति (श्रुतसागरसूरि) १६५, १७४, ३७९, ३८१, ३८७, ७७०
— प्रस्तावना (पं० महेन्द्रकुमार न्याया-चार्य) १६५, ३७७
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक ३१६, ३७५
तत्त्वार्थसार ३४१
तत्त्वार्थसूत्र (विवेचनसहित—पं० सुखलाल संघवी) २५३, २७९, ३०५, ३२९, ३३१, ३३५, ३५१, ३५६, ३६९, ३७७, ३८१, ३८२, ३८५, ३८८, ३९०, ४००, ४४५, ७८०
तत्त्वार्थसूत्र (सम्पादक—जुगलकिशोर मुख्तार) ७८७
तत्त्वार्थसूत्र (बृहत्प्रभाचन्द्र) ७८७, ७८९-७९१

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

— अपरनाम : दशसूत्र, जिनकल्पिसूत्र ७८७, ७८९-७९१
तत्त्वार्थसूत्र-हारिभद्रीयवृत्ति २६६, २७१-२७३, २७६, ३१०, ३३२
तत्त्वार्थसूत्र का मंगलाचरण (पं० दरबारीलाल कोठिया) ५४३
तत्त्वार्थसूत्र-जैनागमसमन्वय ३९०, ३९१, ३९४, ४०६, ४०९, ४४५
तत्त्वार्थाधिगमसूत्र (तत्त्वार्थसूत्र श्वेताम्बर-मान्य) २५७, २५९, २६२, २८७, २८८, २९४, ३०७, ३०९, ३१४, ३१७, ३१८, ३२१, ३२६, ३३६, ३८६, ३९८, ४२३, ६९४, ६९७
तत्त्वार्थाधिगमभाष्य (तत्त्वार्थभाष्य) २५३-२५५, २५९, २६३, २७०, ५७८, २७९, २८५, २८७, २९०, २९८, ३००, ३०७, ३१४, ३१७-३१९, ३२१, ३२२, ३२४, ३२७, ३२८, ३३१, ३३५, ३३६, ३३८-३४६, ३४८-३७५, ३७९, ३८१, ३८२, ४२४-४२६, ४४७, ४४८, ५०६, ६६७, ६९४
तत्त्वार्थाधिगमसूत्र की सटिप्पण प्रति ३२४, ३२६
तालपलंबसुत्त (तालप्रलम्बसूत्र) ७, ८१-८५
तित्थोगालियपयन्नु (तीर्थोद्गालिक) ४६३
तिलोयपण्णत्ती (त्रिलोकप्रज्ञप्ति) १९३, २१९, २८१, ४३१-४५१, ४५३-४५८, ५६१-४६५, ६८०, ७२६, ७२९
तीर्थंकरगोत्र ७३९
तीर्थंकरप्रकृतिबन्धक-कारण (दि०—१६, श्वे०—२०) ६९४
तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्यपरम्परा ३, १६५, १९६, २३४
तीर्थंकरमाता द्वारा देखे जानेवाले स्वप्न (दि०—१६, श्वे०—१४) ६९४
तीर्थंकरीतीर्थसिद्ध (श्वे० मान्यता) २७८
तेरापन्थ (श्वेताम्बर) ७२
त्रिलक्षणकदर्थन (पात्रकेसरी) ४९३
त्रिषष्टिशलाका-महापुराण (चामुण्डराय) ५८६

द

दंसणपाहुड (दर्शनप्राभृत) २४५, ४०९
— श्रुतसागरटीका ५०, १६६ (अपवादवेष), ४२१
दरबारीलाल कोठिया, न्यायाचार्य (पं०) ५४२, ५४३, ५७२, ६०५
दर्शनपरीषह (समवायांग) ४०८
दर्शनसार (आ० देवसेन) ५१०
दलसुख मालवणिया (पं०) ३४७
दशरथ ६४२
दशवैकालिकसूत्र (श्वे०) ३१, ५२, ५३, १६२, १७०, २६९, ३६७
दशवैकालिकसूत्र (दिगम्बरीय) १७०-१७२
— श्रीविजयोदयाटीका (अपराजितसूरि) १७०
दशसूत्र (बृहत्प्रभाचन्द्रकृत तत्त्वार्थसूत्र) ७८७, ७९१
दिगम्बर (जैनमुनि) ७५२
दिगम्बरगुरु-परम्परा ६९५, ६९६
दिग्नाग (बौद्धदार्शनिक) ४९४
दिग्वासस् ६३३
दिन्नसूरि (श्वे० आचार्य) ५१९

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

दिवाकर मुनिपुंगव ६२४
दिवाकर, दिवाकरयति (सन्मतिसूत्रकार सिद्धसेन) ५२१, ६४५
दिव्यध्वनि ७२९
दिव्यध्वनि सर्वभाषात्मक ४५१
दिव्यावदान (बौद्धग्रन्थ) ४१६
दीक्षालिंग भक्तप्रत्याख्यानलिंग १०६, १०७
दुर्विनीत (गंगवंशी राजा अविनीत का उत्तराधिकारी, पूज्यपाद का शिष्य) ५१०
दुःषमाकालश्रमणसंघ-स्तव ५१८
देवकी (कृष्णमाता) ७२७
देवदूष्य वस्त्र १५९
देवर्द्धिगणि-क्षमाश्रमण २३५
देवेन्द्र मुनि शास्त्री ६९
देवेन्द्रस्तव (श्वे० ग्रन्थ) ६९
देशभूषण और कुलभूषण राजकुमार ६३५
देशयति (देशव्रती, देशविरत, श्रावक) ७७२, ७७३, ५८९
देशामर्शकसूत्र (देसामासियसुत्त=उपलक्षक शब्द) ७, ८१-८५
—'तालप्रलम्ब' (तालपलंब) देशामर्शकसूत्र ७, ८१-८५
—'आचेलक्य' देशामर्शकसूत्र ७, ८, ८१-८३
—'णमोकारमंत्र' देशामर्शक मंगलसूत्र ८४
देशावकाशिकव्रत ६७९
दैगम्बरी दीक्षा ६३५, ६५७, ७५०, ७५१, ७५३
द्रव्यपरिग्रह ४०
द्राविड़संघ ५१०
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका ४७३, ४७४
द्वात्रिंशिकाएँ ४७०, ४८१, ४८२
द्वात्रिंशिकाएँ (केवली-उपयोग-युगपद्वादी) ४८४
द्वात्रिंशिकाएँ (द्वितीय, पंचम) ५२४
द्वादशकल्प (बारह सौधर्मादि स्वर्ग) ३८२, ३८३, ३८४,
द्वादशवर्षीयदुर्भिक्ष ७४१, ७५३
द्वादशारनयचक्र (मल्लवादी, श्वे०) ५०२
द्वेष्य-श्वेतपट (न्यायावतार के कर्त्ता तथा वृद्धवादी के शिष्य सिद्धसेन) ४९१, ५३६, ५३७, ६१९
द्रोणाचार्य ६८०

ध

धनञ्जय-नाममाला ५९०
धम्मपद (बौद्धग्रन्थ) ७५
धरसेन (आचार्य) ७४१
धर्मकथाग्रन्थ २४१
धर्मकीर्ति (बौद्धाचार्य) ४९२
धर्मक्षेत्र (कर्मभूमि) १७८
धर्मलाभ हो (आशीर्वचन—श्वेताम्बर, यापनीय) ६३९
धर्मवृद्धि हो (आशीर्वाद—दिगम्बर) ६३८, ६३९
धर्मोत्तर (बौद्धाचार्य) ४९२
धवलाटीका (देखिये, 'षट्खण्डागम')
धान्यकुमारमुनि-कथानक (बृ. क. को.)७५१

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

न

नन्दिसूत्र (नन्दीसूत्र) ६९, ७०, ३९१, ३९४, ३९६, ४०७
नन्दिसूत्र की पट्टावली (स्थविरावलि) ४४२, ५१८
नन्दीश्वरभक्ति २९३
नन्दीसूत्र की हिन्दी विवेचना (लालमुनि जी एवं मुनि पारसकुमार जी) ६९
नन्दीवृत्ति (आ० हरिभद्र) ४८५
नन्द्यन्त नाम ५, ६२
नपुंसकवेदनोकषायकर्म ७४२, ७४३
नपुंसकशरीरांगोपांग नामकर्म ७४२, ७४३
नयसार ग्रामचिन्तक (महावीर का प्रथम भव—श्वे०) ७५९
नाग (नागपुर का राजा) ७५०
नागदत्तमुनि-कथानक (बृ.क.को.) ७५०
नागपुर ७५०
नागश्री-कथानक (बृ.क.को.) ४५१, ७५७
नाग्न्य (लोकरूढ़नाग्न्य, मुख्यनाग्न्य, उपचरितनाग्न्य—विशे.भाष्य) ३६७, ३७४
नाग्न्यलिंग १०४, २५८
नाग्न्यव्रत ६९०
नाथूराम प्रेमी, पं० ३, १५, ६०, ६१, ६३-६५, ७६, ८०-८२, ८५-८७, ९१, ९४, ९५, ९९-१०१, ११५, १७०, १७१, १९७, ४१९, ४२३-४२५, ६०१, ६४५, ७००, ७०१
नारद ६५०, ७११
नारद (अवद्वार) क्षुल्लक ६३९
नारद-पर्वत-कथानक (बृ.क.को.) ७५२
निदर्शना अलंकार ३५३
नियमसार ७२, २४५, ३८८, ३९६, ३९८, ४००, ४०४, ५०७
निरम्बर २०१
निर्ग्रन्थ (नग्न) २०, २००, २०२, ४१५, ४१६, ६३२, ६३३, ६९०, ७५२, ७८२, ७८३
निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघ ३७०
निर्ग्रन्थशूर ६६३
निर्ग्रन्थ (दिगम्बर) संघ, सम्प्रदाय, परम्परा ४१६
निर्ग्रन्थी (श्वे०) २८३, २८५, ३५८
निर्यापकगुरु, निर्यापकाचार्य ९७
निर्युक्ति २४१, २४२, २४३
निशीथ : एक अध्ययन (दलसुख मालवणिया) ५२, ५३, ७८
निशीथचूर्णी ५३, ४७०, ५३४, ५३५
निशीथभाष्य (विसाहगणि-महत्तर) ७८
निशीथसूत्र ५२-५४, १५७
निश्चयद्वात्रिंशिका ४८६, ४८७, ४८९-४९१
निश्चय-व्यवहार नय (तत्त्वार्थभाष्य) ३५८
निषीधिका ७८३
निह्नव ४९९
नीतिशतक (भर्तृहरि) २७७
नीतिसारपुराण (सिद्धसेन) ४७१
नेमिचन्द्र (डॉ०, ज्योतिषाचार्य) १९४, १९६
नैगमदेव (हरिणेगमेसि) ७२७
नैगमनय (देशपरिक्षेपी, सर्वपरिक्षेपी—तत्त्वा. भाष्य) ३५८
नैमित्तिक (भद्रबाहु-द्वितीय, श्वे०) ४९८
नोकर्माहार २९१

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

पाण्डुराङ्गतपस्वी ५९०
पातञ्जल योगदर्शन ३७३
पातञ्जलयोगदर्शन-भाष्य (व्यास) ३३२, ३७३, ३७४
पात्रकेसरी स्वामी (पात्रस्वामी) ४९२-४९४, ४९६
पादलिप्त (श्वे० आचार्य) ५१९
पारञ्चिकप्रायश्चित्त ४८१, ७७१
पारसी (समाज) ९१
पार्श्वनाथचरित (वादिराज सूरि) ३७५, ५८७, ५८९, ६०९
पाल्यकीर्ति शाकटायन ६१, २०३, २०५, २०६, २८१, ४१९, ६१७, ६४५, ६७७, ७९०, ७९१
पाषण्ड (मिथ्याधर्म-प्ररूपक) ७७०
पी० एल० वैद्य, डॉ० ५०४
पुग्गल=मांस (दशवैकालिक, निशीथचूर्णि) ५३
पुण्यप्रकृतियाँ १८६, १८७, ४२३
पुन्नाग (एकप्रकार का वृक्ष) ७००
पुन्नागवृक्षमूलगण ६७४, ६७५, ७००, ७५९
पुन्नाटदेश (कर्नाटक) ७००, ७५९
पुरातन-जैनवाक्य-सूची ४६२, ४६९-४८१, ४८३, ४८६, ४८९-४९२, ४९६, ४९७, ४९९, ५००, ५०३-५०८, ५१३, ५१५, ५१७, ५२०-५२३, ५२५, ५२७-५३२, ५३५-५३८
पुरुषशरीरांगोपांग नामकर्म ७४२, ७४३
पुरुषवेद (पुंवेद)-नोकषायकर्म ७४२, ७४३
पुरुषवेद प्रशस्तवेद १८६, १८७
पुरुषशरीर प्रशस्तवेद १८६, १८७
पुरुषशरीर संयम का हेतु २५
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय १४६
पुरूरवा भील (महावीर का पूर्वभव—दिग०) ७५९
पुलकादि मुनि ३८७, ३८८
पुष्पदन्त (षट्खण्डागमकार) ७४१
पुष्पदन्ता आर्यिका (मायाचार का परिणाम) ४३
पूज्यपाद (देवनन्दी) ६३, ३७०, ५०१, ५०५-५१०, ५४०, ५४४, ५४६, ५५६, ५९५, ५९६, ६०४, ६११, ६२६
पूतिगन्धा ७३६
पूतिमुखी दासी ४३
पूर्वभावप्रज्ञापनीय नय ३५८
पृथिवीमती आर्यिका ६४२
पृथुवीकोङ्गणि महाराज (गंगवंशी) १६९
प्रकरणार्यवाचा (बौद्धग्रन्थ) ४९४
प्रकीर्णक साहित्य (श्वे० ग्रन्थ) ५, ६९, ६७७-६७९
प्रज्ञापनासूत्र, पण्णवणासुत्त, पन्नवणासुत्त ३९८, ३९९
प्रज्ञाश्रमणत्व ऋद्धि २८१
प्रतिक्रमण ७७७
प्रतिक्रमणग्रन्थत्रयी १८३, ७६५, ७७७-७८४
— प्रभाचन्द्रकृतटीका ७८२-७८४
प्रतिमायोग १८२
प्रतिलेखन, प्रतिलेखना (पिच्छी) १७७, १७८, २४०
प्रतीन्द्र ६४१
प्रत्याख्यानग्रन्थ २४१
प्रत्याख्यान-निर्युक्ति (मूलाचारगत) २४१

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

प्रत्युत्पन्ननय, प्रत्युत्पन्नग्राही नय ७०६
प्रथम शुक्लध्यान १८८, १८९
प्रद्युम्नचरित ६४४
प्रबन्धकोश (राजशेखर) ४७२, ४७६
प्रबन्धचिन्तामणि (मेरुतुंगाचार्य) ४७२, ४७७
प्रभव स्वामी (श्वे० श्रुतकेवली) ६४६, ७२८
प्रभाचन्द्र आचार्य (प्रमेयकमलमार्त्तण्ड के कर्त्ता) ७६, ७७, २३३
प्रभाचन्द्र-पण्डित (प्रतिक्रमणग्रन्थत्रयी के संस्कृतटीकार) ७७७
प्रभावकचरित (प्रभाचन्द्रसूरि, श्वे०) ४७२, ४७६, ४८१, ५०३
प्रभावकचरित्र (आर्यरक्षित, श्वे०) १३९
प्रमाणसागर (मुनि) ४४६
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड (प्रभाचन्द्र) ७६, ७७, २३३, २९२, ५४१
प्रवचनपरीक्षा (स्वोपज्ञवृत्तिसहित) २२, १६४, १७९, २०४, २६९, २७०, २७३, २९०, २९२, २९६, २९७
प्रवचनमाताएँ ६
प्रवचनसार ३४, ७९, ११०, १६७, १९९, २२४, २४६, ३९७, ३९९, ४०३, ५४६, ५७२, ६८९
— तत्त्वदीपिका टीका (आचार्य अमृतचन्द्र) २८६
— तात्पर्यवृत्ति (आचार्य जयसेन) १५२, २२४, २२५, २३०, २९३, २९४, ७३८, ७६६
— प्रस्तावना (अँगरेजी—डॉ० ए० एन० उपाध्ये) ६५
प्रवचनसारोद्धार (श्वे० ग्रन्थ) १३६, ४३८
प्रवर्तकाचार्य १९४
प्रवर्तनी ३५८
प्रव्रज्या (निश्चय, उपचार) २३२
प्रशमरतिप्रकरण (उमास्वाति, श्वे०) २५४
प्रशस्तनिदान २६
प्रशस्तलिङ्ग १४, १५०
प्राकृत साहित्य का इतिहास (डॉ० जगदीशचन्द्र जैन) ३९१
प्रायश्चित्त (दशविध) ७६५
प्रायश्चित्तसंग्रह ७७६
प्रियदर्शना (भ. महावीर की पुत्री—श्वे०) ६६६

ब

बलदेव (श्री राम) ६४१
बलदेव (कृष्ण के भाई) ६५१, ७१२
बसन्तीलाल नलवाया (पण्डित, श्वे०) ५२
बारस-अणुवेक्खा १६७, २४५, ४०५, ४०६
बालचन्द्र (पं० शास्त्री) १९६
बालपण्डितमरण ४४
बाह्यपरिग्रह ३१-३८
बृहत्कथाकोश (आ० हरिषेण) ८७-९१, ७०१, ७२७, ७३५, ७३९-७४१, ७४३, ७४६, ७४८-७५४, ७५८-७६०, ७६२
बृहत्कथाकोशकार की त्रुटियाँ ७४३
बृहत्कल्पसूत्र ५, ८१, २८४
— लघुभाष्य (संघदासगणी) ७८, ८४, १६०
बृहत्क्षेत्रसमास (श्वे० ग्रन्थ) ४४७
बृहत्प्रतिक्रमण ७७७

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

बृहत्प्रभाचन्द्र (लघुतत्त्वार्थसूत्रकार) ७८७, ७८९-७९१
बोटिक, बोडिय (संघ, संम्प्रदाय) ३
बोधपाहुड २४५, ३९५
— श्रुतसागरटीका ५७, २१९, ४२१
बौद्धग्रन्थ ७५
ब्रह्मविद् ६८०
ब्राह्मण ६८०

भ

भक्तपरिज्ञा (भत्तपरिण्णा) ६६, ६९, ७०, ७२, ७३, ७४
भक्तप्रत्याख्यान १२-१६, १०५
भगवती-आराधना (देवेन्द्रकीर्ति दि. जैन ग्रन्थमाला, शोलापुर) ११२
भगवती-आराधना (विशम्बरदास --- देहली) ४२, १११
भगवती-आराधना (जैन सं० सं० सं० सोलापुर) ३-५, ७-५१, ५४-६१, ६३-७६, ७८-८७, ९१, ९२, ९४-११२, १५४-१६८, १७०, १७१, १७४, १७६-१८७, १८९, १९३, ४०८, ४२४, ४२५, ४५९, ४६०, ६५९, ६७७, ६७८, ७११, ७४१, ७४४, ७८८
— विजयोदयाटीका (अपराजितसूरि) ७-२७, ३०-३८, ४१, ४५, ४७, ४९-५१, ७४, ८१-८४, ९६-१००, १०४, १०६-१०९, ११५-१४५, १४९-१५१, १५४-१६५, १६८, १७०, १७६-१८१, १८३-१८६, १८८-१९०, १९३, २६४, २६५, ४२३, ६५९ (अपराजिताटीका), ७८०
— प्रस्तावना (पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री) ७२, ७८, ८०, ९२, ९५, ११२
भगवती-आराधना और उसकी टीकाएँ (लेख—नाथूराम प्रेमी) ६१, ६५, ८०, ८६, ९१
भगवती-आराधना-भाषावचनिका (पं० सदासुखदास जी) ५६
भगवती-आराधना और शिवकोटि (लेख—पं० परमानन्द शास्त्री) ५८, ८५
भगवती सूत्र (देखिये, 'व्याख्याप्रज्ञाप्ति')
भट्टारकसम्प्रदाय (ग्रन्थ—प्रो० जोहरापुरकर) ६९९
भट्टारकीय युग ६०९
भद्रबाहुकथानक (बृ.क.को.) ७००, ७४१, ७४६, ७५३, ७६०-७६२
भद्रबाहुचरित्र (महाकवि रइधू) ९२, ९३
भद्रबाहु द्वितीय (श्वे०, निर्युक्तिकार) ४९६, ४९८, ४९९, ५५६, ६२५
भद्रबाहु श्रुतकेवली ९५ (ऊनोदरकष्टसहन) ४९८, ७६१
भद्राचार्य (दिगम्बर जैनमुनि) ७५३
भरत (ऋषभपुत्र, चक्रवर्ती) ६४९
भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट पूना ४७५
भायाणी एच०सी०डॉ० (देखिये, 'ह' वर्ण)
भारतीयविद्या (पत्रिका) ५१३, ५२७
भावना (आचारांग का २४वाँ अध्ययन) १५७, १५९
भावपरिग्रह ४०
भावपाहुड (भावप्राभृत) ३९५, ४०९
भावपूर्वविद् ४३६
भावसंग्रह (प्राकृत—देवसेन) २९२, ७८८

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

भावसंग्रह (वामदेव) १७९, ७८८
भावार्थदीपिका (भगवती-आराधना की टीका) ५६
भाषाएँ (महाभाषाएँ और क्षुद्रभाषाएँ) ४५१
भिक्खु-भिक्खुणियाँ (श्वे०) २८३
भिक्षुणी २८३, २८५
भिक्षुप्रतिमाएँ १८१, १८२
भुक्त्युपसर्गाभाव (केवली) २९३
भूतपूर्वनय, भूतार्थग्राहीनय, भूतप्रज्ञापननय, भूतग्राहीनय ७०६-७०८
भूतबलि ७४१
भूतार्थनय ७०८

म

एम० ए० ढाकी (प्रोफेसर) ४१३, ४५१
एम० डी० वसन्तराज (डॉ०) २३
मगधदेव ७२९
मघवा चक्रवर्ती ६४९
मण्डपदुर्ग १६६
मदनूर संस्कृत शिलालेख ६२४
मनुष्यजाति का एकत्व ६८१
मयूरकथानक (बृ. क. को.) ७५२
मरणविभक्ति ६९, ४०६, ४०७
मरणविभक्ति (मूलाचारगत) २४१
मरणसमाही (श्वे. ग्रन्थ) ६७, ६९
मरीचि-कथानक (बृ.क.को.) ७५९
मरुदेवी के सोलह स्वप्न ७१८, ७१९
मल्लवादी (सन्मतितर्क के टीकाकार, श्वे०) ५०१, ५०२
मल्लिनाथ, मल्लि ४३६-४३८, ६८९
मल्लिषेणप्रशस्ति ४९३
मल्लितीर्थंकर ४२
मल्लीकुमारी, मल्ली ६६५
महाकवि स्वयम्भू (संकटाप्रसाद उपाध्याय) ७१७
महापुराण (आ. जिनसेन) ४५१
महाप्रत्याख्यान (श्वे० ग्रन्थ) ६९
महाभारत ७५
महाराष्ट्रीप्राकृत ५३९
महाविकृतियाँ ५१
महावीर के पूर्वभव ७५९
महावीरचरिउ (रइधू) ७०३
महावीर जैन विद्यालय रजतमहोत्सव-ग्रन्थ ४९९
महाव्रतोपदेशक सूत्र ८
महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य (पं०, प्रो०) ३७७, ५४१, ५४२, ५४४, ५४५
मागधीभाषा में उपदेश ७२९
माणिक्यनन्दी ६३
मानतुङ्गाचार्य और उनके स्तोत्र (मधुसूदन ढाकी, जितेन्द्र शाह) ४५२, ४५४
मानसिक अमृताहार ७३०
मायाचार ४२
मासकल्प (स्थितिकल्प) ६
मित्रनन्दिगणी ६०
मुनिजनचिन्तामणि २२०
मुनिपुंगव ६७०, ६७२
मूर्च्छा, राग, इच्छा, ममत्व—एकार्थक ३९, २८५
मूलगुण २८ (दिगम्बर मुनि) ४९, १९८, १९९, २०२, ७६५, ७७६, ७७८, ७८४

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

मूलगुण २७ (श्वेता०, यापनीय मुनि) २०८, २०९, ७६६
मूल प्रायश्चित ७६६, ७७७
मूलाचार ११०, १७२, १७४, १९३-२०३, २०७, २१०, २११, २१३-२२२, २२५, २२६-२३१, २३४-२४१, २४३-२४९, ४०८, ४२५, ४८६, ६७७, ७०९, ७९०
— आचारवृत्ति (आ० वसुनन्दी) १७२, १९३, १९९, २०२, २११, २१६, २३९, २४१, २४३
मूलाचारटीका २२०
मूलाचारप्रदीप २२०
मूलाचारसद्वृत्ति २२०
मूलाराधना ३, १०५
मूलाराधनादर्पण ५६, १०५, १०८
मृगेशवर्मा (कदम्बवंश) ३७०, ४१५, ४१६
मृदुमति (ब्राह्मणपुत्र) ६३५
मेतार्यमुनि-कथा (श्वेताम्बर) ८६-९१
मेतार्यमुनिकथा (दिगम्बर—बृ. क. को.) ८७-९१
मेरुतुङ्गाचार्य (प्रबन्धचिन्तामणि के कर्त्ता, श्वे०) ४७२
मोक्खपाहुड ५६१
मोनियर मोनियर विलिअम्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी ८३, १२५, १७७
मोहनलाल दुलीचन्द्र देसाई (श्वे० विद्वान्) ६४४
मौनव्रत के फल ७४७, ७४८
म्लेच्छादि का उपद्रव १६६

य

यति ४३२, ४५८, ६७६, ६७७
यतिग्रामाग्रणी (भदन्त शाकटायन) ४३२, ४५८, ६७६
यतिवृषभ (आचार्य) ४३१, ४३२, ४४१, ४५४, ४५६-४६०, ६७६
यथाजातरूपधर २०१
यथालन्दिक मुनि (देखिये, 'अथालन्दक')
यमपाश-कथानक (बृ.क.को.) ७५१
यशस्तिलकचम्पू (सोमदेवसूरि) ६१०, ६७८
यशोदा (तीर्थंकर महावीर की पत्नी—श्वे०) ६६६, ७०२
यशोधर-चन्द्रमती-कथानक (बृ.क.को.) ७४५, ७४८, ७५१, ७५५, ७५६
यशोविजय (उपाध्याय, श्वे० मुनि) ४८३
यापनसंघक (यापनीयसंघ) ७६०
यापनीय (मत, मुनि, आचार्य, संघ, सम्प्रदाय, परम्परा) ३, ५८, १९८, २०२-२०४, २०६, २१०, २१२, २१५, २१७-२१९, २२१, २३३, ३७०, ४२३, ६१७-६२१, ६२३-६२५, ७१७-७२०, ७२३, ७३१, ७४१, ७५९, ७६२ (उत्पत्तिस्थान), ७६९-७७२, ७७५-७७९, ७८२, ७८७, ७८९-७९१
यापनीय और उनका साहित्य (श्रीमती डॉ० कुसुम पटोरिया) ६१७, ६२३-६२६, ६४५-६४८, ७०२, ७११, ७१२, ७१७, ७२४, ७२६-७२९, ७३०, ७३५, ७३९, ७४४, ७५८-७६०
यापनीयग्रन्थ ३, १९७, २१९, २२२, २३८, २३९, २४४, ७३९, ७४१, ७६५,

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

७६७, ७६८, ७७०, ७७१, ७७७, ७७९, ७८७
यापनीयग्रन्थ के लक्षण ५, ७५४
यापनीयतन्त्र (यापनीय सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ) ४६२
यापनीय-यतिग्रामाग्रणी (उपाधि) ७९१
यापनीयसंघ सचेलाचेलमार्गी
— स्थविरकल्पिक-मुक्ति मान्य २०४
— आचेलक्य मूलगुण अमान्य २०३-२१०
युगपद्वाद, यौगपद्यवाद, युगपत्पक्ष (देखिये, केवलि-उपयोगद्वय)
युक्त्यनुशासन (समन्तभद्र) ५११, ५४९, ५५१, ६१३, ६१६
योगचिकित्साविधि-न्याय २०६-२०८, ७९०
योगनिरोध (चतुर्थ शुक्लध्यान) ७३७
योगसारप्राभृत (आचार्य अमितगति) ११०
योगी, योगीन्द्र (समन्तभद्र) ५९०, ५९१
योगाचार्यभूमिशास्त्र (मेत्रेयकृत बौद्धग्रन्थ) ४९४

र

रइधू (महाकवि) ९२, ७०३
रघुनन्दन (राम) ६४०
रघूत्तम (राम) ६३५
रजोहरण १७८
रतनचन्द्र जैन मुख्तार (पण्डित) ७४२
रत्नकरण्ड और आप्तमीमांसा का भिन्न-कर्तृत्व (लेख—प्रो० हीरालाल जैन) ५५७
रत्नकरण्ड के कर्तृत्व-विषय में मेरा विचार और निर्णय (लेख—पं० जुगल-किशोर मुख्तार) ५५७
रत्नकरण्डश्रावकाचार २२८, ५५३, ५५४, ५५७-५६०, ५७३, ५७६-५८६, ५८८, ५९१, ५९९, ६००, ६०३-६११, ६१४-६१६, ६८२, ७४२
— प्रभाचन्द्रटीका ५९३, ६०९
रत्नमाला (शिवकोटि) ५५६, ५७६, ५९९, ६०३-६०९
रत्नसिंह सूरि (श्वे० आचार्य) ३२४, ३२६, ३३१, ४२६
रथ्यापुरुष १६८
रविषेण आचार्य ६२९-६३४, ६३६, ६३७, ६३९, ६४१-६४३, ६४५-६५०, ७१७, ७६९
रहीम कवि २७७
राजकुल ७५०
राजपिण्ड ६
रात्रिभोजनत्याग (विरमण) व्रत १७३-१७५, ७७८
राम ६३४, ३४१, ३४९
रामकथा ६४७
रामप्रसाद शास्त्री (पं०) ५४२
रामिल्ल (दि० जैन मुनि) ७५३
रायल एशियाटिक सोसायटी ४९४
राहुल सांकृत्यायन (पं०) ५०३, ५०४
रिट्ठणेमिचरिउ (स्वयंभूकृत) ७२७
रुक्मिणी ७३९, ७४०, ७४२
रूपकुम्भ मुनि ७४७
रेवती-कथानक (बृ.क.को.) ७५९
रोहिणी (राजा अशोक की महारानी) ७३८
रोहिणी पुस्तक ७३६
रोहिणीव्रत ७३६, ७३८, ७४९

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

ल

लक्ष्मणसेन (रविषेण के गुरु) ६४५
लक्ष्मीमती-कथानक (बृ.क.को.) ७३९, ७४०, ७५६
ललितविस्तरा (हरिभद्रसूरि) २८०, ४३६, ४३९
— पंजिकाटीका (चन्द्रसूरीश्वर) २८०
लिंगपाहुड (कुन्दकुन्द) २४५
लोकविचय (आचारांग का दूसरा अध्याय) १५७
लोच (केशलोच) ४९
लोहार्य (लोहाचार्य) ६२, १९५

व

वज्रनन्दी (पूज्यपाद का शिष्य, द्राविड़संघ-संस्थापक) ३७०, ५१०
वट्टकेर (आचार्य) १९४-१९६, २००, २०१, २११, २४५, ६२०, ६२४
वणिक् ६८१
वरदत्त केवली ६५८, ६७२, ६७३
वरांग, वरांगकुमार (राजा) ६५७-६६३
वरांगचरित (जटासिंहनन्दी) १७२, १७३, १८५, ५३८, ६४८, ६५५-६५८, ६६१-६७०, ६७२-६८३
वरांगी (सुन्दर अंगोंवाली) ६५८-६६०
वर्धमान ६४५, ६४७
वर्द्धमानपुर (बढ़वाण) ७०१
वर्षावास ५२
वलभी (वल्लभी, सौराष्ट्र) वाचना ७६२
वशिष्ठ (वैदिक ऋषि) ६८०
वसनसहितलिंग-धारी १५, १७
वसन्तकीर्ति, दि० जैनाचार्य (आगमविरुद्ध अपवादवेष-प्रवर्तक) १६६
वसुदेव हिंडी (संघदास गणी) ६४४
वसुनन्दी आचार्य (सैद्धान्तिक) १९३
वसुमती (कन्या) ७४७
वस्त्र (पाँच प्रकार के) ७६७
वस्त्रैषणा २७५
वाक्पदीय (भर्तृहरि) ५०३
वादऋद्धि, वादित्वऋद्धि २८१
वादन्याय ५०३, ५०४
वादिदेवसूरि ५२०
वादिराज सूरि ५८६, ५८७, ५८९, ५९२, ६०९
वादीभसिंह ५८८
वारिषेण ७५२
वासुदेव-कथानक (बृ.क.को.) ७५२
विक्रमादित्य (सिद्धसेनदिवाकर-कालीन राजा / ६-७वीं शती ई०) ५१९
विजहना ४, ६८, ७१, ९१-९३
विद्याधर जोहरापुरकर (देखिये 'जोहरापुरकर')
विद्याधरश्रेणियों में गुणस्थानों की संख्या ४५०
विद्यानन्द स्वामी, आचार्य (तत्त्वार्थश्लोक-वार्तिककार) ३७५, ५४२, ५४३, ५७९, ५९५, ५९६, ६०१
विद्यासागर आचार्य (मूकमाटी-महाकाव्य-कार) २७४
विद्युल्लतादि-कथानक (बृ.क.को.) ७५५, ७५९
विद्वान् ५७१, ५७२

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

विमलसूरि (श्वे० आचार्य) ६२९, ६७९
विरती २२३
विविधतीर्थकल्प (जिनप्रभसूरि) ४७२, ४७८
विशीर्णवस्त्रा ६६२
विशेषणवती (जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण) ४८५, ४९७, ४९८, ५०६, ५०७
विशेषावश्यकभाष्य ११६, १३९, १६३, १८०, ४५२, ४९७, ५३५, ६२५
— हेमचन्द्रवृत्ति ११६, १७९, २५७, २६५, २६६, २७०, २७२, २७३
विश्वलोचन कोश ५९७
विष्णुकुमार-कथानक (बृ.क.को.) ७४९, ७५१
विष्णुश्री-कथानक (बृ.क.को.) ७५९
वीरवर्धमानचरित (भट्टारक सकलकीर्ति) ७०३
वीरसेन स्वामी (धवलाकार) १९३
वृक्षमूलयोग ६६१
वृत्तिपरिसंख्यान तप १८३, १८४
वृत्तिपरिसंख्यानातिचार १८३
वृद्धवादी ४७९, ४८१, ५१९
वृद्धवादिप्रबन्ध ४८१
वृन्दावनदास (कविवर) ७६, ८०
वेदत्रय ४१, १३८, २१८, ६१५, ७९१
वेदवैषम्य (श्वेताम्बरग्रंथों में) १३८
वेदवैषम्य ४१, १८०
वैरकुमारकथानक (बृ.क.को.) ७५०
व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवतीसूत्र) ३९७-४०१, ४०८, ४०९
व्यास (वैदिक महर्षि) ६८०
व्योमवासस् (दिगम्बरमुनि) ६३०
व्रतधारण (स्थितिकल्प) ६

श

शतपदी (कर्त्ता—श्वे. मुनि श्री महेन्द्र सूरि) ७८९
शय्यागृह ६
शरीरविज्ञान ३५८
शाकटायन (पाल्यकीर्ति) (देखिये, 'पाल्य-कीर्ति')
शाकटायन सूत्र (व्याकरण) ४६२, ६४५
शाकटायनसूत्र-न्यास (आ. प्रभाचन्द्र) ४२१, ४२२
शान्तिसागर जी (आचार्य) ९३
शालाक्य (शल्यतन्त्र) ४७१
शास्त्रवार्त्तासमुच्चय (हरिभद्रसूरि) ३२९
शिक्षाव्रत ६७९
शिवकोटि (शिवार्य/आदिपुराण १/४९) ५७
शिवकोटि (रत्नमाला ग्रन्थ के कर्त्ता) ५५७, ६०५
शिवभूति, शिवार्य और शिवकुमार (लेख—पं० परमानन्द जैन शास्त्री) ५७७
शिवार्य (भगवती-आराधनाकार) ४, ८, ६०, ४५८, ४५९, ६०६
शूद्र ६८१
शूरदेव (श्रावक) ७५९
शैलक राजर्षि (ज्ञाताधर्मकथांग) ५२
शौरसेनी प्राकृत १९७
श्रमण (दिगम्बर मुनि) ७५१, ७५२
श्रमणा ६४१
श्रमणा अर्जिका ६५८, ६५९, ६७२
श्रमणी २२३, २८४, ७६७

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

श्रमणी के लिए निषिद्ध पंचविध प्रायश्चित्त ७६७
श्रवण ६७०, ६७४, ७५१
श्रवणार्यिका ६७०, ६७१, ६७३
श्रावक ७५४-७५७, ७७३,
श्रावस्ती ४३२
श्रीभूति ७२३
श्रीमती श्रमणी ६३४
श्रीमन्दिरदेव मुनि (यापनीय) ६२४
श्रीविजयशिवमृगेशवर्मा (कदम्बवंश) ३७०, ३७२, ४१५
श्रीषेणमुनि ७५९
श्रुतकेवली ४२२, ६१७
श्रुतकेवलिदेशीय ३७८, ४१९, ४२२, ६१७
श्रुत (अंगप्रविष्ट, अंगबाह्य) ६१७, ७०९
श्रुततीर्थ ४४३
श्रुतधर मुनि ६३५
श्रुतसागर सूरि (भट्टारक, १५वीं शती ई०) १६५ (अपवादवेष-विषयक भूल), १६६ (अपवादवेष-विषयक भूलसुधार)
श्रुतावर्णवाद ३४७
शृंगारशतक (भर्तृहरि) १०१
श्रेणिक (राजा) ६३५, ६४३
श्रेणिकनृप-कथानक (बृ. क. को.) ७५७
श्रेष्ठिकुल ७५०
श्लोकवार्तिक (आ० विद्यानन्द) ५७९
श्वेतपटमहाश्रमणसंघ ३७०
श्वेतपटसंघ ४१६
श्वेताम्बरमत का प्रदर्शन १६५
षट्खण्डागम (छक्खंडागम) ५०७
— पुस्तक २ : ६०२
— पुस्तक ४ : २९१, ६०२
— पुस्तक ८ : ४०१, ७३७
— पुस्तक १२ : १७४, ४०९
— पुस्तक १३ : ३११, ३९६, ३९८
— धवलाटीका (आचार्य वीरसेन)-
— पुस्तक १ : ८३, ४४३, ६९७, ७७०
— पुस्तक २ : १८६
— पुस्तक ४ : ३७५, ६४९, ७३०
— पुस्तक ५ : १८७
— पुस्तक ६ : ८३
— पुस्तक ९ : १७१, ५४५
— पुस्तक १० : २०६
— पुस्तक ११ : ७८४
— पुस्तक १२ : ५६६, ५७३
षटखण्डागम-परिशीलन (पं० बालचन्द्र शास्त्री) १९७
षट्खण्डागम-प्रस्तावना, (प्रो०, डॉ० हीरालाल जैन) ६२
षट्प्राभृत ३८८
षड्दर्शनसमुच्चय (हरिभद्रसूरि)
— तर्करहस्यदीपिका वृत्ति (गुणरत्न) ५६, ६३९
षष्ठ (छह भुक्तियों का त्याग=प्रायश्चित्त) ७६६, ७७७

स

संयतगुणस्थान २००
संयती २२३
संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी (सर एम०

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

मोनियर विलिअम्स) ८३, १२५, १७७
संस्तारारूढ़ ७८, ७९
सगर चक्रवर्ती ६४९
सगरपुत्र ७३०
सङ्कटाप्रसाद उपाध्याय (डॉ०) ७१७
संग्रहग्रन्थ २४१
संथारग (श्वे० ग्रन्थ) ६७
संशयमिथ्यादृष्टि ६४५
सटीक नयचक्र (मल्लवादी) ५०२, ५०३
सत्—द्रव्यास्तिक, मातृकापदास्तिक, उत्पन्नास्तिक, पर्यायास्तिक (तत्त्वार्थ-भाष्य) ३५८
सत्साधुस्मरण-मंगलपाठ ५८८
सदासुखदास (पं०) ४२, ७६, ८०, १११
सन्थारा ६५९
सन्न्यासकाल (भक्तप्रत्याख्यानकाल) १०५
सन्मतिप्रकरण ४८०, ४८१, ५१४
सन्मतिसूत्र, सन्मतितर्क, सन्मति ४६९, ४७३, ४८०, ४८२, ४८५, ४८७-४९३, ४९६-५०३, ५०७, ५०८, ५१०, ५१५, ५१७, ५२२, ५२५-५३१, ५३३-५३९, ६१७-६२६, ६७७
सन्मतिसूत्र और सिद्धसेन (लेख—पं० जुगलकिशोर मुख्तार) ४६९, ६०४
सप्तभंगी ५४१, ५४५, ५४६
समन्तभद्रग्रन्थावली ७२९
समन्तभद्र स्वामी ५०७-५१४, ५४०-५५२, ५५४-५५७, ५६३, ५६९, ५७४, ५७६, ५८३, ५८५-५९३, ५९६, ५९९, ६०१, ६०३-६१६
समयसार १६७, २४५, २४६, २४७, ३९५, ४०४, ४५९, ६७८
— तात्पर्यवृत्ति (आ० जयसेन) ७३८
समराइच्चकहा-प्रस्तावना (जैकोबी) ४९२
समवायांसूत्र २०९, २७७, ४०४, ४०५, ४०८, ४०९, ४५१
समाधितन्त्र (समाधिशतक) ५४६, ५६१
समीचीन धर्मशास्त्र (पं० जुगलकिशोर मुख्तार) ५५९, ५९९
सम्बोधसत्तरी (रत्नशेखर सूरि, श्वे०) २५६
सम्यग्दर्शनी ३५८
सम्यग्व्यायाम (अधिगम) ३५८
सर्वगुप्तगणी ६०, ६१, ४३२
सर्वनन्दी आचार्य ४३२, ४५८
सर्वश्रमण, नोसर्वश्रमण (श्वे०) ७७२, ७७८
सर्वार्थसिद्धि टीका ५८, १६७, २६६, २७५, २७८, २८६, २९२, ३००, ३०३, ३०५, ३२४, ३३२, ३३८-३६४, ३६८-३७०, ३७२, ३७९, ३८०, ३८८, ४२६, ५०१, ५०६, ५०८, ५४०, ५४२, ५४४, ५४७-५५६, ५७८, ५७९, ५९५, ५९६, ६११, ६२६, ६९७, ७०४, ७०५, ७८०
सर्वार्थसिद्धि पर समन्तभद्र का प्रभाव (लेख—पं० जुगलकिशोर मुख्तार) ५४०, ६११
सर्वार्धमागधी भाषा ७२९
सल्लेखना ६७९
सवस्त्रमुक्तिनिषेध ६, ११५, १४२, १९८, ४३३, ६५६, ६८९, ७५०, ७५४, ७५८, ७८३

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

सागरमल (डॉ०) ३, १९७, ६२९
— अभिनन्दनग्रन्थ (देखिये, 'ड')
सागारधर्मामृत १४६
साङ्ख्यकारिका ६७८
साटकमात्र (साड़ीमात्र) १०८
साध्वी (आर्यिका) ६४१
सामन्तभद्र (श्वेताम्बर) ५१३, ६०१
सामाचार (समाचार) २२६, २८३
सारसंग्रह ५४५
सावलिपत्तन (दक्षिणापथ) ७६०, ७६२
सिद्धसारस्वत ५८८
सिद्धसेन—द्वितीय (सन्मतिसूत्रकार, दिगम्बर) ५७, ४६९, ४७०, ४८२, ४९४, ४९७, ५००-५०३, ५०५, ५०६, ५०८, ५१५-५३१, ५३६, ६०३, ६११, ६१३, ६१७-६२६
सिद्धसेन—तृतीय (न्यायावतार के कर्त्ता, श्वे०) ४८२, ५०९, ५३१
सिद्धसेन—प्रथम (कतिपय स्तुतिरूप द्वात्रिंशिकाओं के कर्त्ता, दिगम्बर) ४८२, ४८६, ५०१, ५०५, ५०७, ५१५, ५३०-५३२
— तीनों सिद्धसेनों के साथ 'दिवाकर' उपनाम का प्रयोग ५१८, ५२१
सिद्धसेन गणी (श्वे० आचार्य) ३३४, ३४४, ५२८
सिद्धान्त और उनके अध्ययन का अधिकार (लेख—प्रो० हीरालाल जैन/ष.खं./पु.४/प्रस्ता.) ६०२, ६०६
सिद्धार्थ (क्षुल्लक) ६४२
सिद्धि (इच्छित लौकिक पदार्थ की प्राप्ति) ७४५, ७४८
सिद्धिभक्त (सफलता चाहनेवाला) ७४४
सिद्धिविनिश्चय (अकलंकदेव) ४६९, ४७०, ४९४, ५३५, ६२०, ६२१
सिन्धुदेश ७५३, ७६१
सीता ६४१
सीतेन्द्र ६४१
सुखलाल संघवी (पं०) ६४, ६५, ७७, २७९, ३३५, ३८१, ४४५, ५०२-५०८, ५४१-५४६
सुत्तपाहुड ७३, २२४, २२५, २३१, २३२, २४६, ७०९
सुदत्तमुनि ७४५, ७५६
सुदर्शना (राजा रतिवर्धन की रानी) ६४२
सुधर्मा स्वामी ६४६, ६४७, ७१७
सुभद्रिलनगर ७२७
सुरेश सिसोदिया (डॉ०) ५५
सुलिंग २५८
सूत्रकृतांगसूत्र ७६, १५७, २५७, ७८३
सेतवत्थ (श्वेतवस्त्र) संघ ४१६
सेनसंघ (सेनगण) ५१६
सोमदत्त ७५०
सोमदत्त-विद्युच्चौर-कथानक (बृ.क.को.) ७५३
सोमदेव सूरि (यशस्तिलकचम्पूकार) ६०२, ६०८
सोमशर्म-वारिषेण-कथानक (बृ.क.को.) ७५२
सोलहकल्प २१७
सौत्रान्तिक (एक बौद्ध सम्प्रदाय) ४९५

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

सौधर्मेन्द्र ६४९
सौराष्ट्रदेश ७६२
स्तिबुकसंक्रमण ७४२, ७४३
स्तुतिग्रन्थ २४१
स्तुतिविद्या (जिनशतक-समन्तभद्र स्वामी) ४५२
स्त्रीचेतस् (स्त्रीवेदी पुरुष, भावस्त्री) ५२५, ५२६
स्त्रीनामगोत्रकर्म, स्त्रीगोत्रकर्म, स्त्रीवेदनाम-कर्म, स्त्र्यंगोपांगनामकर्म, स्त्रीशरीरां-गोपांगनामकर्म ७४२, ७४३
स्त्रीनिर्वाणप्रकरण (पाल्यकीर्ति शाकटायन) ९, ३१, २०३, २०५, २१२, २८१, ४६२, ७९०
स्त्रीमुक्तिनिषेध २४, १३२, २१०, २७८, ४३५, ६४१, ६६५, ६८७, ७२०, ७२१, ७३५, ७५८, ७८३
स्त्रीलिंगसिद्ध (श्वे०) २७८
स्त्रीवेदनोकषायकर्म ७४२, ७४३
स्त्रीवेदी-पुरुषमुक्ति-मान्यता ५२३
स्थविरकल्प (श्वेताम्बर) ७५३
स्थविरकल्प (अर्धफालकसंघ) ७४६
स्थविरकल्पिक साधु (यापनीय) २०४
स्थानकवासी परम्परा (श्वे०) ७२
स्थानांगसूत्र २६४, २६९, २७३, ३९५-४०२, ४०४, ४०६, ६२३
स्थिति (नियोगतः = अनिवार्यतः पालन करने योग्य) ६
स्थितिकल्प (दश) ६
स्थूलवृद्ध (जैनमुनि) ७५३
स्याद्वादरत्नाकर (वादिदेवसूरि) ५२०
स्वयम्प्रभदेव (सीता का जीव) ७३०
स्वयम्भू (अपभ्रंश-पउमचरिउ के कर्त्ता) ६२९, ६४७, ६४८, ७१७-७२८, ७३०, ७३१
स्वयम्भू राजा ७२३
स्वयम्भूस्तोत्र (समन्तभद्र) ४५१, ४५४, ५११, ५१२, ५४७, ५४८, ६७७, ६८२, ७२८
स्वामिकुमार (स्वामी कार्तिकेय) ७४१
स्वामी (समन्तभद्र की उपाधि) ५९२, ५९३
स्वामी समन्तभद्र (ले०—जुगलकिशोर मुख्तार) ५०८, ५०९, ६१०

ह

हंसतेल ५४
एच० सी० भायाणी, डॉ० ७१७, ७१८, ७२१, ७२३
हरिणिगमिसी, हरिणेगमेसि (नैगमदेव), हरिनैगमेसि ७२७
हरिभद्रसूरि (श्वे० आचार्य) २७६
हरिवंशपुराण ५१६, ६२०, ६५०, ६८७-७१३, ७२७
—प्रस्तावना (डॉ० पं० पन्नालाल साहित्याचार्य) ६५०, ६५१
हरिषेण आचार्य (बृहत्कथाकोशकार) ८७, ६९९, ७३५, ७४१, ७४३, ७४७, ७४८, ७५२, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७६२
हरिषेण चक्रवर्ती ६४९
हर्मन जैकोबी, डॉ० (जर्मन विद्वान्) ४९२
हस्तकश्रेष्ठि-कथानक (बृ.क.को.) ८७-९०

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

हीरालाल जैन (प्रो०, डॉ०) ३, ५५७, ५५८, ५९७, ६०२, ६०४, ६०७
हीरालाल जैन (प्रो०, डॉ०) का नया मत ५५७
हुण्डावसर्पिणीकाल की दस आश्चर्यजनक घटनाएँ (श्वे०) ४३८
हुम्मच-कन्नड़ अभिलेख ४२०
हेत्वाभास, हेत्वाभासता ५, ६०, ७१, १४१, ४५६, ६१७, ६४५, ६७०, ६९९, ७२६

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

प्रयुक्त ग्रन्थों एवं शोधपत्रिकाओं की सूची

१. **अंगुत्तरनिकायपालि** (भाग ३,४) : विहार राजकीय पालि-प्रकाशन मण्डल। ई० सन् १९६०।
— भाग ३ > निपात ६, ७, ८।
— भाग ४ > निपात ९, १०, ११।

२. **अनगारधर्मामृत** : पं० आशाधर जी। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९७७।
— ज्ञानदीपिका संस्कृतपञ्जिका (स्वोपज्ञ)।
— सम्पादन-अनुवाद : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री।

३. **अनुयोगद्वारसूत्र** : श्री आर्यरक्षित स्थविर। श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान)।
— अनुवादक-विवेचक : उपाध्याय श्री केवलमुनि जी।

४. **अभिधानचिन्तामणि-नाममाला** : आचार्य हेमचन्द्र। प्रकाशक : श्री रांदेररोड जैनसंघ, अडाजण पाटीया, रादेररोड, सूरत। ई० सन् २००३।

५. **अभिधान राजेन्द्र कोष** (भाग १ से ७), द्वितीय संस्करण। श्री अभिधान राजेन्द्र कोष प्रकाशन संस्था, अहमदाबाद। ई० सन् १९८६।

६. **अविमारक (नाटक)** : महाकवि भास। 'भासनाटकचक्र' चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी। ई० सन् १९९८।

७. **अष्टपाहुड** : आचार्य कुन्दकुन्द। शान्तिवीरनगर, श्री महावीर जी (राजस्थान)। ई० सन् १९६८।
— दंसणपाहुड।
— चारित्तपाहुड।
— सुत्तपाहुड।
— बोधपाहुड।
— भावपाहुड।
— मोक्खपाहुड।
— लिंगपाहुड।
— सीलपाहुड।

— श्रुतसागरसूरिकृत संस्कृतटीका।
— पं० पन्नालाल साहित्याचार्यकृत हिन्दी अनुवाद।

८. **अष्टसहस्री** (भाग १, २, ३) : आचार्य विद्यानन्द। दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर (मेरठ) उ० प्र०। ई० सन् १९९०।

९. **आगम और त्रिपिटक : एक अनुशीलन**—मुनि श्री नगराज जी डी० लिट्०। प्रथम खण्ड के प्रकाशक : कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली। ई० सन् १९८७। द्वितीय खण्ड के प्रकाशक : अर्हत् प्रकाशन, कलकत्ता। ई० सन् १९८२।

१०. **आचारांग** (प्रथम श्रुतस्कन्ध) : मुम्बापुरीय श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति मुंबई। मुद्रण स्थान-सूरत। ई० सन् १९३५।
— भद्रबाहुकृत निर्युक्ति।
— शीलांकाचार्यकृत वृत्ति।

११. **आचारांगसूत्र**—प्रथम श्रुतस्कन्ध : अनुवादक—मुनिश्री सौभाग्यमल जी। प्रकाशक—जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन। वि० सं० २००७। द्वितीय श्रुतस्कन्ध : अनुवादक—पं० वसन्तीलाल नलवाया। प्रकाशक—धर्मदास जैन मित्रमण्डल, रतलाम, म० प्र०। ई० सन् १९८२।

१२. **आचारांगचूर्णि** : श्री जिनदास गणी। श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम। ई० सन् १९४१।

१३. **आतुरप्रत्याख्यान** : वीरभद्र। प्रकाशक—बालाभाई ककलभाई अहमदाबाद। वि० सं० १९६२।

१४. **आदिपुराण** (भाग १,२) : आचार्य जिनसेन। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८८।
— अनुवाद : पं० (डॉ०) पन्नालाल साहित्याचार्य।

१५. **आप्तपरीक्षा** : विद्यानन्द स्वामी। भारतवर्षीय अनेकान्त परिषद्, लोहारिया (राज०)। ई० सन् १९९२।

१६. **आप्तमीमांसा** : आचार्य समन्तभद्र। वीरसेवा मंदिर ट्रस्ट प्रकाशन वाराणसी—५। ई० सन् १९८९।
— अनुवाद : पं० जुगलकिशोर मुख्तार।

१७. **आराधना कथा कोश** : ब्रह्मचारी नेमिदत्त। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९३।

१८. **आलापपद्धति** : आचार्य देवसेन। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्, लोहरिया (राज०)। ई० सन् १९९०।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

१९. **आवश्यकनिर्युक्ति** (भाग १) : भद्रबाहुस्वामी। भेरूलाल कनैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, मुम्बई। वि० सं० २०३८।
— हारिभद्रीय वृत्ति : हरिभद्रसूरि।

२०. **आवश्यक - मूलभाष्य** (आवश्यकसूत्र - मूलभाष्य) : कर्त्ता का नाम अज्ञात है। आवश्यकनिर्युक्ति की हारिभद्रीयवृत्ति में उद्धृत तथा जिन-भद्रगणी के विशेषावश्यकभाष्य में अन्तर्भूत।

२१. **आवश्यकसूत्र** (पूर्वभाग एवं उत्तरभाग) : गणधर गौतमस्वामी। श्री ऋषभदेव केशरी-मल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम। ई० सन् १९२८ एवं १९२९।

२२. **इष्टोपदेश** : पूज्यपाद स्वामी। परमश्रुत प्रभावक मण्डल, चौकसी चैम्बर, खारा कुआ, जवेरी बाजार, बम्बई-२। ई० सन् १९५४।

२३. **ईशादिदशोपनिषद् (शांकरभाष्यसहित)** : मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् १९७८।

२४. **ईशाद्यष्टोत्तरशतोपनिषद्** : चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। ई० सन् १९९५।
— परमहंसपरिव्राजकोपनिषद्।
— बृहदारण्यकोपनिषद्।
— जाबालोपनिषद्।
— नारदपरिव्राजकोपनिषद्।
— तुरीयातीतोपनिषद्।
— संन्यासोपनिषद्।
— भिक्षुकोपनिषद्।
— छान्दोग्योपनिषद्।
— मुण्डकोपनिषद्।
— कठोपनिषद्।
— ईशावास्योपनिषद्।
— श्वेताश्वतरोपनिषद्।
— याज्ञवल्क्योपनिषद्।

२५. **उत्तराध्ययनसूत्र** : वीरायतन प्रकाशन, आगरा-२।
— सम्पादन : साध्वी चन्दना दर्शनाचार्य।

२६. **उत्तरभारत में जैनधर्म** : चिमनलाल जैचन्द्र शाह। प्रकाशक : सेवामन्दिर रावटी, जोधपुर। ई० सन् १९९०।
— अँगरेजी से हिन्दी अनुवाद : कस्तूरमल बांठिया।

२७. **उदानपालि** (सुत्तपिटक, खुद्दक निकाय) : विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी (नासिक)। ई० सन् १९९५।

२८. **उपदेशमाला** (उवएसमाला) : श्री धर्मदास गणी। प्रकाशक : धनजी भाई देवचन्द्र जौहरी, मुम्बई।
— विशेषवृत्ति (दोघट्टी टीका) : रत्नप्रभसूरि।
२९. **ओघनिर्युक्ति** : भद्रबाहु स्वामी। आगमोदय समिति मेहसाना। ई० सन् १९१९।
— वृत्तिकार : द्रोणाचार्य।
३०. **कठोपनिषद्** : गीता प्रेस गोरखपुर। वि० सं० २०२४।
— शांकरभाष्य : श्री शंकराचार्य।
३१. **कल्पकौमुदीवृत्ति** : श्री शान्तिसागरकृत कल्पसूत्रव्याख्या। श्री ऋषभदेव केशरीमल जैन श्वेताम्बर संस्था, रतलाम। ई० सन् १९३६।
३२. **कल्पनिर्युक्ति** (कल्पसूत्रनिर्युक्ति) : श्वेताम्बर भद्रबाहु-द्वितीय। मुनि कल्याण विजय जी - कृत 'श्रमण भगवान् महावीर' (पृ. ३३६) में तथा श्री ताटक गुरु जैन ग्रन्थालय उदयपुर (राज०) द्वारा प्रकाशित 'कल्पसूत्र' की श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री-लिखित प्रस्तावना (पृ. १६) एवं परिशिष्ट १ की टिप्पणी क्र. ३ में उल्लेख है।
३३. **कल्पप्रदीपिकावृत्ति** : श्री संघविजयगणिकृत कल्पसूत्रवृत्ति। प्रकाशन : सेठ वाडीलाल चकुभाई देवीशाह पाटक। वि० सं० १९९१।
३४. **कल्पलता व्याख्या** : समयसुन्दरगणिकृत कल्पसूत्रव्याख्या। निर्णयसागर मुद्रणयन्त्रालय, मुम्बई। ई० सन् १९३९।
३५. **कल्पसमर्थन** : (कल्पसूत्रान्तर्गत अधिकार-बोधक)। ऋषभदेव केशरीमल जैन श्वेताम्बर संस्था, रतलाम। वि० सं० १९९४।
३६. **कल्पसूत्र** : प्राकृत भारती, जयपुर।
३७. **कल्पसूत्र** : भाषानुवाद : आर्यारत्न सज्जनश्री। वि० सं० २०३८।
३८. **कसायाहुड** (भाग १, ८, १२, १३, १४, १५, १६) : आचार्य गुणधर। भारतवर्षीय दि० जैन संघ, चौरासी, मथुरा। ई० सन् १९७४---। द्वितीय संस्करण।
— चूर्णिसूत्र : यतिवृषभाचार्य।
— जयधवला टीका : आचार्य वीरसेन।
— प्रस्तावना : १. ग्रन्थपरिचय एवं २. ग्रन्थकारपरिचय : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाश-चन्द्र शास्त्री, (पृ. ३-७३) ३. विषयपरिचय : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य। (पृ. ७३-१०६) ("भूमिका के मुख्य तीन भाग हैं : ग्रन्थ, ग्रन्थकार और विषय-परिचय। इनमें से आदि के दो स्तम्भ पं० कैलाशचन्द्र जी ने लिखे हैं और अन्तिम स्तम्भ पं० महेन्द्रकुमार जी ने लिखा है।" सम्पादकीय वक्तव्य/ पृ. १४ ब)।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

३९. **कसायपाहुडसुत्त** : आचार्य गुणधर। श्री वीरशासन संघ, कलकत्ता। ई० सन् १९५५।
— चूर्णिसूत्र : आचार्य यतिवृषभ।
— सम्पादन-अनुवाद-प्रस्तावना : पं० हीरालाल जैन सिद्धान्तशास्त्री।

४०. **कादम्बरी** (पूर्वभाग) : बाणभट्ट। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
— संस्कृतटीका : श्वेताम्बराचार्य श्री भानुचन्द्र गणी।

४१. **कादम्बरी** : बाणभट्ट। सम्पादक : आचार्य रामनाथ शर्मा 'सुमन' एवं राजेन्द्रकुमार शास्त्री। प्रकाशक : साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ (उ०प्र०) / अष्टम संस्करण, ई० सन् १९९०।

४२. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा** : स्वामिकुमार। परमश्रुत प्रभावक मंडल, श्रीमद्राजचन्द्र आश्रम अगास (गुजरात)। ई० सन् १९७८।
— अँगरेजी प्रस्तावना : प्रो० ए० एन० उपाध्ये।
— हिन्दी-अनुवाद : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री।

४३. **कालिदास की तिथिसंशुद्धि** : डॉ० रामचन्द्र तिवारी। ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली। ई० सन् १९८९।

४४. **काव्यानुशासन** (स्वोपज्ञवृत्ति-सहित): वैयाकरण एवं काव्यशास्त्री, 'कलिकालसर्वज्ञ,' आचार्य हेमचन्द्र। प्रवचन प्रकाशन, पूना। वि० सं० २०५८।
— संस्कृत व्याख्या : पण्डित शिवदत्त एवं काशीनाथ।

४५. **काव्यप्रकाश** : मम्मटाचार्य। ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी। ई० सन् १९६०।
— हिन्दी व्याख्या : विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि।

४६. **कूर्मपुराण** : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। ई० सन् १९९३।

४७. **क्या दिगम्बर प्राचीन हैं?** लेखक : शिशु आचार्य नरेन्द्रसागर सूरि। शेठ श्री अभेचंद गुलाबचंद झवेरी परिवार, मुम्बई के सौजन्य से प्रकाशित। प्राप्तिस्थान—१. जम्बूद्वीप पेढ़ी पालीताणा, २. ज्ञानशाला गिरिराज सोसायटी पालीताणा। ई० सन् १९९५।

४८. **खरा सो मेरा** : डॉ० सुदीप जैन। कुन्दकुन्द भारती (प्राकृत भवन) नई दिल्ली। ई० सन् १९९९।

४९. **खारवेल प्रशस्ति : पुनर्मूल्यांकन**-चन्द्रकान्तबाली शास्त्री। प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली। ई० सन् १९८८।

५०. **गुणस्थान-सिद्धान्त : एक विश्लेषण**—डॉ० सागरमल जैन। पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी। ई० सन् १९९६।

५१. **गुरुपरम्परा से प्राप्त दिगम्बर जैन आगम : एक इतिहास**—डॉ० एम० डी० वसन्तराज। श्री गणेश वर्णी दि० जैन संस्थान नरिया, वाराणसी-५। ई० सन् २००१।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

५२. **गोम्मटसार-कर्मकाण्ड** (भाग १,२) : आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९६।
— जीवतत्त्वप्रदीपिका-कर्णाटवृत्ति : केशववर्णी।
— कर्णाटवृत्ति का 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नाम से ही संस्कृतरूपान्तर : श्री नेमिचन्द्र।
५३. **गोम्मटसार-जीवकाण्ड** (भाग १, २) : आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९७।
— जीवतत्त्वप्रदीपिका-कर्णाटवृत्ति : केशव वर्णी।
— जीवतत्त्वप्रदीपिका-संस्कृतरूपान्तर : श्री नेमिचन्द्र।
५४. **चाणक्यशतक** : आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य।
५५. **छेदपिण्ड** : आचार्य इन्द्र (इन्द्रनन्दी)। 'प्रायश्चित्तसंग्रह'—माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला (वि० सं० १९७८) में संगृहीत।
५६. **छेदशास्त्र** : (कर्त्ता अज्ञात-पु.जै.वा.सू. / प्रस्ता. / पृ.१०९) 'प्रायश्चित्तसंग्रह'—माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला (वि० सं० १९७८) में संगृहीत।
५७. **जातक** (तृतीय खण्ड)—अनुवादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। ई० सन् १९९०।
५८. **जातक-अट्ठकथा** (सुत्तपिटक-खुद्दकनिकाय)—तृतीयभाग। विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी। ई० सन् १९९८।
५९. **जातकपालि** (सुत्तपिटक - खुद्दकनिकाय)—द्वितीयभाग। विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी। ई० सन् १९९८।
६०. **जातकमाला** : आर्यशूर। सम्पादक-अनुवादक : सूर्यनारायण चौधरी। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् २००१।
६१. **जिनमूर्ति-प्रशस्ति-लेख** : कमलकुमार जैन। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर (म.प्र.)। ई० सन् १९८२।
६२. **जिनशासन की कीर्तिगाथा** : डॉ० कुमारपाल देसाई। श्री अनिलभाई गाँधी (ट्रस्टी)। १०८ जैनतीर्थदर्शनभवन ट्रस्ट, श्री समवसरण महामन्दिर, पालिताणा-३६४२७०।
६३. **जिनसहस्रनामटीका** : श्रुतसागरसूरि।
६४. **जिनागमों की मूलभाषा** : डॉ० नथमल टाँटिया। प्राकृत टेस्ट सोसायटी, अहमदाबाद।
६५. **जीवसमास** : अज्ञात पूर्वधर आचार्य (जिनका नाम ज्ञात नहीं है)। अनुवादिका : साध्वी विद्युत्प्रभाश्री। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी। ई० सन् १९९८।
— भूमिका : डॉ० सागरमल जैन।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

६६. **जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा**—श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री। प्रकाशक—श्री तारकगुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर (राज०)। ई० सन् १९७७।

६७. **जैन कथामाला** (भाग ४८) (आधारग्रन्थ : १. उपदेशमाला २. आख्यानक मणिकोश) : मधुकर मुनि। मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, ब्यावर (राज०)।

६८. **जैन तत्त्वविद्या** : मुनि श्री प्रमाणसागर जी। भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली। ई० सन् २०००।

६९. **जैनधर्म** : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री। भारतीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा (उ.प्र.)। ई० सन् १९७५।

७०. **जैनधर्म और दर्शन** : मुनि श्री प्रमाणसागर जी। शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६। ई० सन् १९९६।

७१. **जैनधर्म का मौलिक इतिहास** (प्रथमभाग) : आचार्य हस्तीमल जी।

७२. **जैनधर्म का मौलिक इतिहास** (द्वितीय भाग/द्वितीय संस्करण) : आचार्य हस्तीमल जी। जैन इतिहास समिति, जयपुर (राजस्थान) ई० सन् १९८७।

७३. **जैनधर्म का मौलिक इतिहास** (तृतीय भाग/प्रथम संस्करण) : आचार्य हस्तीमल जी। जैन इतिहास समिति, जयपुर (राजस्थान)। ई० सन् १९८३।

७४. **जैनधर्म का मौलिक इतिहास** (चतुर्थ भाग) : आचार्य हस्तीमल जी। जैन इतिहास समिति, जयपुर (राजस्थान)। ई० सन् १९८७।

७५. **जैन धर्म का यापनीय सम्प्रदाय** : डॉ० सागरमल जैन। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी। ई० सन् १९९६।

७६. **जैनधर्म की ऐतिहासिक विकासयात्रा** : डॉ० सागरमल जैन। प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)। ई० सन् २००४।

७७. **जैनधर्म के प्रभावक आचार्य** : साध्वी संघमित्रा। जैन विश्वभारती, लाड़नूं (राज०)। ई० सन् २००१।

७८. **जैनधर्म के सम्प्रदाय** : डॉ० सुरेश सिसोदिया। आगम, अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर (राजस्थान)। ई० सन् १९९४।

७९. **जैन निबन्धरत्नावली** (प्रथम भाग) : पं० मिलापचन्द्र कटारिया एवं श्री रतनलाल कटारिया। प्रकाशक : श्री वीरशासन संघ, कलकत्ता। ई० सन् १९६६।

८०. **जैन निबन्धरत्नावली** (द्वितीय भाग) : पं० मिलापचन्द्र कटारिया। भारतवर्षीय दि० जैन संघ, चौरासी, मथरा। ई० सन् १९९०।

८१. **जैन भारती** : (दिगम्बर जैन नरसिंहपुरा नवयुवक मण्डल भीण्डर (मेवाड़) के मन्त्री द्वारा लिखित 'भट्टारक चर्चा' नामक पुस्तिका (ई० सन् १९४१) में उद्धृत)

८२. **जैन विद्या के आयाम–ग्रन्थाङ्क २** (Aspects of Jainology, Vol. II)। पं० बेचरदास दोशी स्मृति ग्रन्थ। प्रकाशक : पार्श्वनाथ शोध संस्थान, वाराणसी, ई० सन् १९८७।

८३. **जैन शिलालेख संग्रह** (भाग १) : संग्रहकर्त्ता–डॉ० हीरालाल जैन। माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति। वि० सं० १९८४ (ई० सन् १९२७)।

८४. **जैन शिलालेख संग्रह** (भाग २) : संग्रहकर्त्ता—पं० विजयमूर्ति। माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति मुम्बई। ई० सन् १९५२।

८५. **जैन शिलालेख संग्रह** (भाग ३) : संग्रहकर्त्ता—पं० विजयमूर्ति। प्रकाशक—माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति, मुम्बई। ई० सन् १९५७।
— प्रस्तावना : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी।

८६. **जैन शिलालेख संग्रह** (भाग ४) : संग्राहक—सम्पादक : डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर। भारतीय ज्ञानपीठ काशी। वीर नि० सं० २४९१।

८७. **जैन साहित्य और इतिहास** (प्रथम संस्करण) : पं० नाथूराम प्रेमी। हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई। ई० सन् १९४२।
द्वितीय संस्करण : प्रकाशक—संशोधित साहित्य-माला, ठाकुरद्वार, बम्बई -२। ई० सन् १९५६।

८८. **जैन साहित्य और इतिहास पर विशद प्रकाश** (प्रथम खण्ड) : पं० जुगलकिशोर मुख्तार। वीरशासन संघ कलकत्ता। ई० सन् १९५६।

८९. **जैन साहित्य का इतिहास (पूर्वपीठिका)** : पं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री। श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी। वीर नि० सं० २४८९।

९०. **जैन साहित्य का इतिहास** (भाग १, २) : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री। श्री गणेश प्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला वाराणसी। वीर निर्वाण सं० २५०२।

९१. **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास** (भाग ३) : डॉ० मोहनलाल मेहता। पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोधसंस्थान, वाराणसी। ई० सन् १९६७।

९२. **जैन साहित्य में विकार** : पं० बेचरदास जैन। अनुवादक : तिलकविजय जी।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

प्रकाशक : श्री दिगम्बर जैन युवकसंघ, ललितपुर। वीर नि० सं० २४५८।

९३. **जैनाचार्य परम्परा महिमा** (३४९ श्लोकात्मक ग्रन्थ, अप्रकाशित) : रचयिता–श्रवण बेलगोल के ३१ वें भट्टारक श्री चारुकीर्ति। इस ग्रन्थ के नाम एवं संस्कृत पद्यों का उल्लेख श्वेताम्बराचार्य श्री हस्तीमल जी ने अपने ग्रन्थ 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास', भाग ३ में पृष्ठ १५२ से १७७ तक किया है और लिखा है कि यह अप्रकाशित ग्रन्थ आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार शोध प्रतिष्ठान, लालभवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३ में उपलब्ध है।

९४. **जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश** (भाग १-४) : क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८५, १९८६, १९८७, १९८८।

९५. **ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र** : (ज्ञातृधर्मकथाङ्ग)। आगम प्रकाशन समिति ब्यावर। ई० सन् १९८१।

— प्रधान सम्पादक : युवाचार्य श्री मिश्रीलाल जी महाराज 'मधुकर'।

— अनुवादक - विवेचक - सम्पादक : पं० शोभाचन्द्र भारिल्ल।

९६. **ज्ञानार्णव** : आचार्य शुभचन्द्र। श्री परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास। ई० सन् १९७५।

९७. **डॉ० सागरमल जैन अभिनन्दन ग्रन्थ** । पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी। ई० सन् १९९८।

९८. **तत्त्वनिर्णयप्रासाद** : श्वेताम्बराचार्य मुनि श्री विजयानन्द सूरीश्वर 'आत्माराम'। प्रसिद्धकर्त्ता : अमरचंद पी० (पद्मा जी) परमार, मुम्बई।

९९. **तत्त्वार्थकर्तृ-तन्मतनिर्णय** : सागरानन्दसूरीश्वर जी महाराज (श्वेताम्बर)। **प्रकाशक** : श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था रतलाम। वि० सं० १९९३।

१००. **तत्त्वार्थराजवार्तिक** (तत्त्वार्थवार्तिक, भाग १, २) : भट्ट अकलंक देव। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९३।

— सम्पादक : प्रो० महेन्द्र कुमार जैन, न्यायाचार्य।

१०१. **तत्त्वार्थवृत्ति** : श्रुतसागर सूरि। भारतीय ज्ञानपीठ काशी। ई० सन् १९४९।

— प्रस्तावना : प्रो० महेन्द्रकुमार जैन न्यायाचार्य।

१०२. **तत्त्वार्थसार** : अमृतचन्द्रसूरि। सम्पादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य। श्री गणेशप्रसाद वर्णी ग्रन्थमाला, वाराणसी,। ई० सन् १९७०।

१०३. **तत्त्वार्थसूत्र** (सर्वार्थसिद्धि) : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९५।
१०४. **तत्त्वार्थसूत्र** : श्री उमास्वाति वाचक। ऋषभदेव केशरीमल जैन श्वेताम्बर संस्था, रतलाम। ई० सन् १९९६।
— हारिभद्रीय वृत्ति : श्री हरिभद्रसूरि।
१०५. **तत्त्वार्थसूत्र** (विवेचनसहित) : पं० सुखलाल संघवी। पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोधसंस्थान, वाराणसी-५। ई० सन् १९९३।
१०६. **तत्त्वार्थसूत्र** (मोक्षशास्त्र) : बृहत्प्रभाचन्द्र। प्रकाशक : समीचीनधर्म-प्रबोध-संरक्षण-संस्थान कोटा (राज०)।
१०७. **तत्त्वार्थसूत्र-जैनागम-समन्वय** : उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज (पंजाबी)। प्रकाशक : लाला शादीराम गोकुलचंद जौहरी, चाँदनी चौक, देहली। ई० सन् १९३४।
१०८. **तत्त्वार्थाधिगमसूत्र** (श्वेताम्बरमान्य तत्त्वार्थसूत्र) : परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास। ई० सन् १९९२।
— तत्त्वार्थाधिगमभाष्य : उपर्युक्त पर आचार्य उमास्वाति द्वारा रचित भाष्य।
१०९. **तत्त्वार्थाधिगमसूत्र** (स्वोपज्ञभाष्ययुक्त) : श्री उमास्वाति-वाचक। प्रकाशक : जीवनचन्द साकरचन्द जवेरी, मुंबई एवं सूरत (गुजरात)। प्रथम भाग—ई० सन् १९२६, मुंबई। द्वितीयभाग—ई० सन् १९३० सूरत।
— तत्त्वार्थभाष्यवृत्ति : श्री सिद्धासेन गणी।
११०. **तर्कभाषा** : केशवमिश्र। चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी। ई० सन् १९७७।
— हिन्दी व्याख्या : आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि।
१११. **तित्थगोलियपयन्नु** (अथवा तित्थोगालियपयन्नु = तीर्थोद्गार)।
११२. **तिलोयपण्णत्ती** (भाग १, २, ३) : आचार्य यतिवृषभ। प्रकाशक : श्री १००८ चन्द्रप्रभ दि० जैन अतिशयक्षेत्र, देहरा-तिजारा (अलवर, राजस्थान)। ई० सन् १९९७।
— अनुवाद : आर्यिका विशुद्धमति जी।
११३. **तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य-परम्परा** (खण्ड १, २, ३, ४) : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य। द्वितीय संस्करण—आचार्य शान्तिसागर छाणी ग्रन्थमाला, बुढ़ाना (मुजफ्फरनगर) उ० प्र०। ई० सन् १९९२।
११४. **तैत्तिरीय आरण्यक**।
११५. **त्रिलोकसार** : आचार्य नेमिचन्द्र।
११६. **थेरीगाथा—अट्ठकथा** (सुत्तपिटक-खुद्दकनिकाय) : विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

११७. **दक्षिण भारत में जैनधर्म** : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् २००१।

११८. **दर्शनसार** : आचार्य देवसेन। अनुवाद एवं विवेचना : पं० नाथूराम जी प्रेमी। जैन ग्रन्थ कार्यालय, हीराबाग, बम्बई। वि० सं० १९७४।

११९. **दशवैकालिकसूत्र** : आचार्य शय्यंभव। भारतीय प्राच्य तत्त्व प्रकाशन समिति पिंडवाड़ा (राजस्थान)। वि० सं० २०३७।

— हारिभद्रीयवृत्ति : हरिभद्रसूरि।

१२०. **दाठावंस** (बौद्धग्रन्थ)।

१२१. **दि० जैन अतिशयक्षेत्र श्री महावीर जी का संक्षिप्त इतिहास** : डॉ. गोपीचन्द्र वर्मा बाँसवाड़ा। रामा प्रकाशन २६२६, रास्ता खजानेवाला, जयपुर।

१२२. **दिगम्बरत्व और दिगम्बरमुनि** : कामता प्रसाद जैन। दि० जैन युवा समिति, १५ भगवान् महावीर मार्ग, बड़ौत, उ० प्र०। ई० सन् १९९२।

१२३. **दिगम्बर जैन सिद्धान्त दर्पण** (प्रो. हीरालाल जी के आक्षेपों का निराकरण): आद्य अंश-लेखक : मक्खनलाल शास्त्री, मुरैना। प्रकाशक : श्री दिगम्बर जैन समाज बम्बई। वीर नि० सं० २४७१। द्वितीय एवं तृतीय अंश—सम्पादक : पं० रामप्रसाद शास्त्री बम्बई। प्रकाशक : दिगम्बर जैन पंचायत बम्बई। ई० सन् १९४४ एवं १९४६।

१२४. **दिव्यावादान** (रोमन लिपि में)—The Divyāvadān, by E.B. Cowell and R.A. Neil, Indological Book House, Delhi 1987 A.D.

१२५. **दिव्यावदान** (नागरी लिपि में)—सम्पादक : डॉ० पी० एल० वैद्य। प्रकाशक—मिथिला विद्यापीठ दरभंगा। ई० सन् १९९९।

१२६. **दीघनिकायपालि** : सम्पादन—अनुवाद : स्वामी द्वारिकादास शास्त्री। बौद्धभारती वाराणसी। ई० सन् १९९६।

— भाग १. सीलक्खन्धवग्ग।

— भाग २. महावग्ग।

— भाग ३. पाथिकवग्ग।

१२७. **द्रव्यस्वाभाव-प्रकाशक-नयचक्र** : श्री माइल्ल धवल। भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी। ई० सन् १९७१।

१२८. **धम्मपद** : व्याख्याकार—कन्छेदीलाल गुप्त और सत्कारि शर्मा वङ्गीय। चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। ई० सन् १९६८।

१२९. **धम्मपद-अट्ठकथा**, भाग १,२ (सुत्तपिटक—खुद्दक निकाय) : विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी। ई० सन् १९९८।

१३०. **धम्मपद-अट्ठकथा,** भाग २ (सुत्तपिटक—खुद्दक निकाय) : नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा। ई० सन् १९७६।

१३१. **नन्दीसूत्र** : विवेचक—स्व. श्री केवलमुनि जी के शिष्य श्री लालमुनि जी के परिवार के सन्त मुनि श्री पारसकुमार जी (धर्मदास सम्प्रदाय)। प्रकाशक—अ० भा० साधुमार्गी जैन संस्कृति-रक्षक संघ, सैलाना (म.प्र.)। ई० सन् १९८४।

१३२. **नियमसार** : आचार्य कुन्दकुन्द। ('कुन्दकुन्द भारती' में संगृहीत)।

१३३. **निशीथसूत्र** (स्वोपज्ञभाष्य सहित) : श्री विसाहगणी महत्तर। (प्रथम विभाग-पीठिका) सम्पादक : उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि तथा मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल'। भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली। ई० सन् १९८२।

— विशेषचूर्णि : श्री जिनदास महत्तर।

— निशीथ : एक अध्ययन—पं० दलसुख मालवणिया।

१३४. **नीतिसार** (नीतिसार-समुच्चय) : इन्द्रनन्दी। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९०।

१३५. **न्यायकुमुदचन्द्र-परिशीलन** : प्रो० उदयचन्द्र जैन। प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.। ई० सन् २००१।

१३६. **न्यायकुसुमाञ्जलि** : उदयनाचार्य।

१३७. **न्यायदीपिका** : अभिनव धर्मभूषण यति। प्रकाशक : भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९०।

१३८. **न्यायमञ्जरी** : जयन्त भट्ट।

१३९. **न्यायावतारवार्तिकवृत्ति** : श्री शान्तिसूरि। सम्पादक : पण्डित दलसुख मालवणिया। प्रकाशक : सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद। ई० सन् २००२।

— प्रस्तावना : पं० दलसुख मालवणिया।

१४०. **पउमचरिउ** (भाग १,२,३,४,५) : महाकवि स्वयम्भू। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८९, १९७७, १९८९, २०००, २००१।

१४१. **पउमचरिय** : विमलसूरि।

१४२. **पञ्चतन्त्र-अपरीक्षितकारक** : विष्णु शर्मा। रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद-२। ई० सन् १९७५।

१४३. **पंचमहागुरुभक्ति** : आचार्य कुन्दकुन्द। ('कुन्दकुन्द भारती' में संगृहीत)।

१४४. **पंचाशक** (पंचाशक-प्रकरण) : आचार्य हरिभद्रसूरि। पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

१४५. **पंचास्तिकाय** : आचार्य कुन्दकुन्द। श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल, श्री मद्राजचन्द्र आश्रम अगास (गुजरात)। ई० सन् १९६९।

— समयव्याख्या (तत्त्वप्रदीपिका वृत्ति) : आचार्य अमृतचन्द्र।

— तात्पर्यवृत्ति : आचार्य जयसेन।

— बालावबोधभाषाटीका : पाण्डे हेमराज।

१४६. **पट्टावलीपराग** : पं० श्री कल्याणविजय गणी। प्रकाशक : कल्याणविजय शास्त्रसंग्रह समिति, जालौर (राजस्थान)। ई० सन् १९५६।

१४७. **पं० रतनचन्द्र जैन मुख्तार : व्यक्तित्व और कृतित्व**। आचार्य श्री शिवसागर दि० जैन ग्रन्थमाला शान्तिवीरनगर, श्रीमहावीर जी (राजस्थान) ई० सन् १९८९।

१४८. **पं० वंशीधर व्याकरणाचार्य अभिनन्दन ग्रन्थ**। सरस्वती-वरदपुत्र पं० वंशीधर व्याकरणाचार्य अभिनन्दनग्रन्थ प्रकाशन समिति, वाराणसी। ई० सन् १९८९।

१४९. **पण्णवणासुत्त** (भाग १,२) : श्री श्यामार्य वाचक। श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई २६। ई० सन् १९६९ एवं १९७१।

— सम्पादन एवं अँगरेजी प्रस्तावना : मुनि पुण्यविजय जी, पं० दलसुख मालवणिया एवं पं० अमृतलाल मोहनलाल भोजक।

१५०. **पद्मपुराण** (पद्मचरित—भाग १,२,३) : आचार्य रविषेण। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् २००१, २००२, २००३।

— सम्पादन-अनुवाद : डॉ० पन्नालाल जैन साहित्याचार्य।

१५१. **पद्ममहापुराण** (वैदिक = हिन्दू)—द्वितीय भाग (भूमि, स्वर्ग, ब्रह्म एवं पातालखण्ड) भूमिका : प्रो० डॉ० चारुदेवशास्त्री। प्रकाशक : नाग पब्लिशर्स, जवाहरनगर, दिल्ली-७। ई० सन् १९८४।

१५२. **परमात्मप्रकाश एवं योगसार** : जोइंदुदेव। परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास। ई० सन् १९७३।

— संस्कृतटीका : ब्रह्मदेव।

— भाषा टीका : पं० दौलतराम जी।

— प्रस्तावना (Introduction) : ए० एन० उपाध्ये।

१५३. **परिशिष्टपर्व** : कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र। प्रकाशक : एशियाटिक सोसाइटी, ५७ पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता। ई० सन् १८९१।

— सम्पादक : हर्मन जैकोबी।

१५४. **पाइअ-सद्द-महण्णवो** : (प्राकृत-हिन्दी-शब्दकोश) : पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् १९८६।

१५५. **पातञ्जलयोगदर्शन** : महर्षि पतञ्जलि। कृष्णदास अकादमी, वाराणसी। ई० सन् १९९९।

— व्यासभाष्य : श्री व्यास।

१५६. **पात्रकेसरी-स्तोत्र** (जिनेन्द्रगुणसंस्तुति) : पात्रकेसरी (पात्रस्वामी)।

१५७. **पालि-हिन्दी कोश** : भदन्त आनन्द कौसल्यायन। राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली-पटना। ई० सन् १९९९।

१५८. **पुरातन-जैनवाक्य-सूची** : पं० जुगलकिशोर मुख्तार। वीरसेवा मन्दिर, सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ० प्र०)। ई० सन् १९५०।

१५९. **पिण्डनिर्युक्ति** : भद्रबाहुस्वामी। शाह नगीनभाई घेलाभाई जव्हेरी, मुंबई। ई० सन् १९१८।

— मलयगिरीया वृत्ति : आचार्य मलयगिरि।

१६०. **प्रकरणरत्नाकर** (चतुर्थभाग) : प्रकाशक—शा० भीमसिंह माणकनी वती, शा० भाणजी माया, मुंबई। ई० सन् १९१२। निर्णयसागर प्रेस मुम्बई।

१६१. **प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी** : श्री गौतमस्वामी - विरचित। प्रकाशक : आचार्य शान्तिसागर दि० जैन जिनवाणी जीर्णोद्धारक संस्था। वीर संवत् २४७३।

— संस्कृतटीका : प्रभाचन्द्र।

— सम्पादक : पं० मोतीचन्द्र गौतमचन्द्र कोठारी, एम० ए०।

१६२. **प्रबोधचन्द्रोदय** : कृष्ण मिश्र यति। चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी। ई० सन् १९७७।

१६३. **प्रमेयकमलमार्तण्ड** (द्वितीयभाग) : आचार्य प्रभाचन्द्र। मुद्रक : पाँचूलाल जैन, कमल प्रिंटर्स मदनगंज-किशनगढ़ (राज०)। वीर नि० सं० २५०७।

— अनुवाद : आर्यिका जिनमती जी।

१६४. **प्रवचनपरीक्षा**-पूर्वभाग (स्वोपज्ञवृत्ति-सहित) : उपाध्याय धर्मसागर। ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम (म.प्र.)।

१६५. **प्रवचनसार** : आचार्य कुन्दकुन्द। परमश्रुत प्रभावक श्रीमद्राजचन्द्र जैन शास्त्रमाला, श्रीमद्राजचन्द्र आश्रम, अगास (गुजरात)। ई० सन् १९६४।

— तत्त्वप्रदीपिकावृत्ति : आचार्य अमृतचन्द्र सूरि।

— तात्पर्यवृत्ति : आचार्य जयसेन।

— बालावबोध भाषाटीका : पाण्डे हेमराज।

— अँगरेजी-प्रस्तावना (Introduction): प्रो० ए० एन० उपाध्ये।

१६६. **प्रवचनसारोद्धार** (उत्तरभाग) : श्री नेमिचन्द्र सूरि। प्रकाशक : सेठ देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार संस्था, मुंबई। ई० सन् १९२२। निर्णयसागर प्रेस मुम्बई।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

— संस्कृतवृत्ति : श्री सिद्धसेनसूरि शेखर

१६७. **प्रवचनसारोद्धार** : श्री नेमिचन्द्रसूरि। प्रकाशक : श्री जैन श्वे. मू. तपागच्छ गोपीपुरा संघ, सूरत। ई० सन् १९८८।

— टिप्पणीकार : श्री उदयप्रभ सूरि।

१६८. **प्रशमरतिप्रकरण** : श्वेताम्बराचार्य उमास्वाति। परमश्रुत प्रभावक मंडल, श्रीमद्राज-चन्द्र आश्रम अगास (गुजरात)। वि० सं० २०४४।

— हारिभद्रीय टीका : श्री हरिभद्र सूरि।

१६९. **प्राकृत एवं संस्कृत साहित्य में गुणस्थान की अवधारणा** : साध्वी डॉ० दर्शनकलाश्री। श्री राजराजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, जयंतसेन म्यूजियम, मोहनखेड़ा (राजगढ़) धार, म० प्र०। ई० सन् २००७।

१७०. **प्राकृत भाषाओं का व्याकरण** : डॉ० रिचार्ड पिशल। विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना-३। ई० सन् १९५८।

— जर्मनभाषा से हिन्दी-अनुवाद : डॉ० हेमचन्द्र जोशी।

१७१. **प्राकृत साहित्य का इतिहास** : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन। द्वितीय संस्करण। चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी। ई० सन् १९८५।

१७२. **प्राचीन भारतीय संस्कृति** : बी० एन० लूनिया। लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक-प्रकाशक, आगरा-३। ई० सन् १९७०।

१७३. **बारस अणुवेक्खा** : आचार्य कुन्दकुन्द।

१७४. **बृहत्कथाकोश** : आचार्य हरिषेण। सिंघी जैन ग्रन्थमाला। ई० सन् १९४३।
अँगरेजी प्रस्तावना : डॉ० ए० एन० उपाध्ये।

१७५. **बृहत्कल्पसूत्र** (मूलनिर्युक्तिसहित) : स्थविर आर्य भद्रबाहु स्वामी।

— Vol. V (चतुर्थ एवं पंचम उद्देश)। ई० सन् १९३८।

— Vol. VI (षष्ठ उद्देश)। ई० सन् १९४२। प्रकाशक श्री आत्मानन्द जैनसभा, भावनगर।

— भाष्य : श्री संघदासगणी क्षमाश्रमण।

— वृत्ति : आचार्य श्री मलयगिरि, जिसे आचार्य श्री क्षेमकीर्ति ने पूर्ण किया।

१७६. **बृहत्संहिता** : वराहमिहिर।

१७७. **बृहदारण्यकोपनिषद्** : ईशादिदशोपनिषद्। मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली। ई० सन् १९७८।

— शांकरभाष्य : श्री शंकराचार्य।

१७८. **बृहद्द्रव्यसंग्रह** : नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव। परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास (गुजरात)। वि० सं० २०२२।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

— संस्कृतटीका : ब्रह्मदेव।
१७९. **ब्रह्मसूत्र** : बादरायण व्यास। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् १९९८।
— शांकरभाष्य : श्री शंकराचार्य।
१८०. **ब्रह्माण्डपुराण** (खण्ड १,२) : प्रकाशक—डॉ० चमनलाल गौतम, संस्कृति संस्थान, बरेली (उ० प्र०) ई० सन् १९८८।
१८१. **भक्तपरिज्ञा** : वीरभद्र। बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद। वि० सं० १९६२।
१८२. **भगवती-आराधना** (भाग १) : शिवार्य। जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर। ई० सन् १९७८।
१८३. **भगवती आराधना** : शिवार्य। जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर। ई० सन् २००६।
— विजयोदयाटीका : अपराजित सूरि।
— प्रस्तावना एवं अनुवाद : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री।
१८४. **भगवती-आराधना** : शिवार्य। प्रकशक : विशम्बरदास महावीरप्रसाद जैन सर्राफ, देहली।
१८५. **भगवती-आराधना** : शिवार्य। प्रकाशक : हीरालाल खुशालचंद दोशी, फलटण। ई० सन् १९९०।
— विजयोदयाटीका : अपराजित सूरि।
— अनुवाद : सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री।
१८६. **भगवतीसूत्र : एक परिशीलन**- आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि। प्रकाशक—श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर (राज०)। वि० सं० २०४९।
१८७. **भगवद्गीता** : शांकरभाष्य।
१८८. **भगवान् महावीर का अचेलकधर्म** : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री। भारतवर्षीय दि० जैन संघ, चौरासी, मथुरा। वि० सं० २००१।
१८९. **भगवान् महावीर और महात्मा बुद्ध** : कामता प्रसाद जैन। वीर नि० सं० २४५३।
१९०. **भट्टारक चर्चा** : लेखक एवं प्रकाशक—मन्त्री, दिगम्बर जैन नरसिंहपुरा नवयुवक मण्डल, भीण्डर (मेवाड़)। ई० सन् १९४१। (लेखक—मंत्री महोदय ने अपने नाम का उल्लेख नहीं किया।)
१९१. **भट्टारकमीमांसा** : पं० दीपचन्द वर्णी नरसिंहपुर-निवासी। प्रकाशक : वीर कालूराम राजेन्द्रकुमार परवार, रतलाम। वीरजयन्ती २४५४, सन् १९२७। तृतीय संस्करण के प्रकाशक : स्व० श्री मोहनलाल जी जैन, श्रीमती क्रान्तिबाई जैन, बाहुबली कॉलोनी सागर (म० प्र०)। ई० सन् २००३।
१९२. **भट्टारकसम्प्रदाय** : प्रो० विद्याधर जोहरापुरकर। जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर। ई० सन् १९५८।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

१९३. **भद्रबाहुचरित** : रत्ननन्दी (रत्नकीर्ति)। जैन भारती भवन, बनारस। ई० सन् १९११।

१९४. **भद्रबाहुचरित्र** : महाकवि रइधू। सम्पादक : डॉ० राजाराम जैन, दिगम्बर जैन युवकसंघ आरा (बिहार), ई० सन् १९९२।

१९५. **भागवतपुराण** (श्रीमद्भागवत महापुराण) : गीता प्रेस गोरखपुर। वि० सं० २०५७।

१९६. **भारतीय इतिहास एक दृष्टि** : डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन। भारतीय ज्ञानपीठ। सन् १९९९।

१९७. **भारतीय दिगम्बर जैन अभिलेख और तीर्थ परिचय मध्यप्रदेश** : १३वीं शती तक : डॉ० कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'। श्री दिगम्बर जैन साहित्य संस्कृति संरक्षण समिति, डी-३०२, विवेक विहार, दिल्ली। ई० सन् २००१।

१९८. **भारतीय पुरालेखों का अध्ययन** : डॉ० शिवरूप सहाय। मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी। ई० सन् १९९९।

१९९. **भारतीय संस्कृति का विकास : वैदिकधारा** : डॉ० मंगलदेव शास्त्री। समाज विज्ञान परिषद्, काशी विद्यापीठ बनारस। १९५६ ई०।

२००. **भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान** : डॉ० हीरालाल जैन। मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल। ई० सन् १९७५।

२०१. **भावना-द्वात्रिंशतिका** : आचार्य अमितगति। ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि, पृ० ४७५। सम्पादक —डॉ.० ए० एन० उपाध्याय एवं पं० फूलचन्द्र शास्त्री। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली।

२०२. **भावसंग्रह** (प्राकृत) : देवसेनाचार्य।

२०३. **भावसंग्रह** : वामदेव। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्, लोहारिया (राजस्थान)।

२०४. **मज्झिमनिकाय** (सुत्तपिटक) : सम्पादक : भिक्षु जगदीश कश्यप। बिहार राजकीय पालि-प्रकाशन मण्डल। ई० सन् १९५८।

— १. मूल पण्णासक।

— २. मज्झिम पण्णासक।

२०५. **मज्झिमनिकायपालि** (सुत्तपिटक) : सम्पादक-अनुवादक : स्वामी द्वारिकादास शास्त्री। बौद्ध भारती, वाराणसी।

— १. मूल पण्णासक। ई० सन् १९९८।

— २. मज्झिम पण्णासक। ई० सन् १९९९।

— ३. उपरि पण्णासक। ई० सन् २०००।

२०६. **मत्स्यपुराण** (पूर्वभाग, उत्तरभाग) : हिन्दी साहित्य सम्मलेन प्रयाग। ई० सन् १९८८-८९।

२०७. **महापुराण** : आचार्य जिनसेन। भारतीय ज्ञानपीठ काशी। ई० सन् १९५१।

२०८. **महाभारत** (आदिपर्व/अध्याय १-७) : श्री वेदव्यास। गीता प्रेस गोरखपुर (उ०प्र०)। नवम्बर १९५५ ई०।

२०९. **महाभारत** (शान्तिपर्व) प्रकाशक : वसन्त श्रीपाद सातवलेकर। स्वाध्याय मण्डल, किल्ला-पारडी (बलसाड़) गुजरात। ई० सन् १९८०।

२१०. **महावग्गपालि** (विनयपिटक) : सम्पादक-अनुवादक : स्वामी द्वारिकादास शास्त्री। बौद्ध भारती, वाराणसी। ई० सन् १९९८।

२११. **मानतुङ्गाचार्य और उनके स्तोत्र** : प्रो० मधुसूदन ढाकी और डॉ० जितेन्द्र शाह।

२१२. **मानवभोज्यमीमांसा** : मुनि कल्याणविजय जी गणी। श्री कल्याणविजय-शास्त्रसंग्रह-समिति, जालोर (राज०)। ई० सन् १९६१।

२१३. **मीमांसाश्लोकवार्तिक** : कुमारिल भट्ट।

२१४. **मुद्राराक्षस** (नाटक) : विशाखदत्त। ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

२१५. **मूलाचार** (पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध) : आचार्य वट्टकेर। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९२, १९९६।

— आचारवृत्ति : आचार्य वसुनन्दी सिद्धान्तचक्रवर्ती।

— हिन्दी-टीकानुवाद : आर्यिकारत्न ज्ञानमती जी।

— प्रधान सम्पादकीय : ज्योति प्रसाद जैन।

२१६. **मूलचार** : आचार्य वट्टकेर। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९६।

— सम्पादकीय : डॉ० फूलचन्द्र प्रेमी और डॉ० श्रीमती मुन्नी जैन।

२१७. **मूलाराधना** (भगवती-आराधना) : शिवार्य। स्वामी देवेन्द्रकीर्ति दिगम्बर जैन ग्रन्थ-माला शोलापुर। ई० सन् १९३५।

— मूलाराधनादर्पण (संस्कृतटीका) : पं० आशाधर जी।

— हिन्दी-अर्थकर्त्ता : पं० जिनदास पार्श्वनाथ शास्त्री फड़कुले।

२१८. **मोक्षशास्त्र** (तत्त्वार्थसूत्र, जिनकल्पिसूत्र) : आचार्य प्रभाचन्द्र। समीचीन धर्मप्रबोध संरक्षण संस्थान, कोटा (राजस्थान)।

२१९. **मोटी साधु-वन्दना** (गुजराती) : छोटालाल जी महाराज। थानकवासी जैन उपाश्रय, लिमड़ी (सौराष्ट्र) ई० सन् १९९१।

२२०. **मोहेन-जो-दड़ो : जैन परम्परा और प्रमाण** : आचार्य विद्यानन्द जी। कुन्दकुन्द भारती, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८८।

२२१. **यशस्तिलकचम्पू** : सोमदेवसूरि। प्रकाशक : तुकाराम जावजी, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई। पूर्वखण्ड (द्वितीय संस्करण)। ई० सन् १९१६। उत्तरखण्ड (प्रथम संस्करण)। ई० सन् १९०३।

— संस्कृतव्याख्या : श्रुतसागरसूरि।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

२२२. **यापनीय और उनका साहित्य** : श्रीमती डॉ० कुसुम पटोरिया। वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट प्रकाशन। ई० सन् १९८८।

२२३. **रत्नकरण्डश्रावकाचार** : स्वामी समन्तभद्र। श्री मुनिसंघ साहित्य प्रकाशन समिति, सागर म० प्र०। ई० सन् १९९२।

— पद्यानुवाद : आचार्य श्री विद्यासागर जी

— हिन्दी अनुवाद : डॉ० (पं०) पन्नालाल जैन साहित्याचार्य।

२२४. **रत्नमाला** : शिवकोटि। 'सिद्धान्तसारादि संग्रह' में संगृहीत।

२२५. **लब्धिसार** (लब्धिसार-क्षपणासार) : नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती। आचार्य श्री शिव-सागर ग्रन्थमाला, शान्तिवीर नगर, श्री महावीर जी। वीर नि० सं० २५०९।

— सम्पादक : ब्र० पं० रतनचन्द्र मुख्तार सहारनपुर, उ० प्र०।

२२६. **ललितविस्तरा** : आचार्य श्री हरिभद्रसूरि।

— पञ्जिका टीका : श्री मुनिचन्द्र सूरीश्वर जी

— हिन्दी-विवेचना : पंन्यासप्रवर श्री भानुविजय जी गणिवर।

— भूमिकालेखक : श्री सम्पूर्णानन्द जी, राज्यपाल, राजस्थान।

— परिचयलेखक : प्रो० डॉ० पी० एल० वैद्य, वाडिया कालेज, पूना।

२२७. **लाटीसंहिता** : पं० राजमल्ल। श्रावकाचारसंग्रह (भाग ३)। सम्पादक : पं० हीरालाल जैन शास्त्री। जैनसंस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर। ई० सन् २००३।

२२८. **लिङ्गपुराण** : संस्कर्त्ता : आचार्य जगदीश शास्त्री। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् १९८०।

२२९. **लिंगप्राभृत (लिंगापाहुड)** : आचार्य कुन्दकुन्द।

२३०. **वरांगचरित** : जटासिंहनन्दी। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९६।

२३१. **वात्सल्यरत्नाकर** (आचार्य श्री विमलसागर अभिनन्दन ग्रन्थ)—द्वितीय खण्ड। प्रकाशक : भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्, श्री दि० जैन बीसपंथी कोठी, मधुवन (शिखर जी)। ई० सन् १९९३।

२३२. **वायुपुराण** : हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (इलाहाबाद)। ई० सन् १९८७।

२३३. **विद्वज्जनबोधक** : पं० पन्नालाल जी संघी

२३४. **विधि-मार्ग-प्रपा** : खरतरागच्छालंकार श्री जिनप्रभसूरि। श्री महावीर स्वामी जैन देरासर ट्रस्ट, ८ विजय वल्लभ चौक, पायुधनी, मुंबई-४००००३। ई० सन् २००५।

— अनुवाद : साध्वी सौम्यगुणाश्री (विधिप्रभा)।

२३५. **विविधदीक्षा-संस्कारविधि** : आर्यिका शीतलमती जी। सम्पादिका- ब्र० मैनाबाई जैन, संघसंचालिका। आशीषप्रदाता-सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य सन्मतिसागर जी। मुद्रक-शिवशक्ति प्रिण्टर्स, ९, नेहरू बाजार, होटल तारावाली गली, उदयपुर (राज०)।

— प्रकथन : डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'। ५८४ म. गाँ. मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर- ४५२ ००१ (म० प्र०)। ई० सन् २००२।

२३६. **विशेषावश्यकभाष्य** (भाग २) : जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण। दिव्यदर्शन ट्रस्ट, ६८ गुलालवाड़ी, मुंबई ४०० ००४। वि० सं० २०३९।

— मलधारी हेमचन्द्रसूरिकृत वृत्ति

२३७. **विष्णुपुराण** : गीता प्रेस गोरखपुर। वि० सं० २०५८।

२३८. **वीरवर्धमानचरित** : श्री सकलकीर्ति। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९७४।

— सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल जैन सिद्धान्तशास्त्री।

२३९. **वेदान्तसार** : परमहंस परिव्राजकाचार्य सदानन्द योगीन्द्र। पीयूष प्रकाशन, इलाहाबाद। ई० सन् १९६८।

— तत्त्वपारिजात हिन्दीटीका : सन्तनारायण श्रीवास्तव्य।

२४०. **वैदिक माइथॉलॉजी** : ए० ए० मैक्डॉनल (A.A. Macdonell)। हिन्दी अनुवादक : रामकुमार राय। चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी। ई० सन् १९८४।

२४१. **वैदिक साहित्य और संस्कृति** : आचार्य बलदेव उपाध्याय। शारदा संस्थान, वाराणसी-५। ई० सन् १९९८।

२४२. **वैराग्यशतक** (भर्तृहरिशतक) : मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली। ई० सन् २००२।

२४३. **वैशेषिकसूत्रोपस्कार** (वैशेषिकसूत्र-व्याख्या) : आचार्य शंकर मिश्र। चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी।

२४४. **व्याकरण महाभाष्य** (पस्पशाह्निक) : महर्षि पतञ्जलि। चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी।

२४५. **व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र** (भगवतीसूत्र / तृतीयखण्ड / शतक ११-१९) : श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान)।

— अनुवादक-विवेचक-सम्पादक : श्री अमर मुनि जी एवं श्रीचन्द सुराणा 'सरस'।

२४६. **शिवमहापुराण** - प्रस्तावना : अवधविहारीलाल अवस्थी। गौरीशंकर प्रेस, मध्यमेश्वर, वाराणसी।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

२४७. **श्रमण भगवान् महावीर** : पं० (मुनि) कल्याणविजय जी गणी। प्रकाशक : श्री क० वि० शास्त्र-संग्रह समिति, जालोर। वि० सं० १९९८, ई० सन् १९४१।

२४८. **श्रुतावतार** : विबुधश्रीधर। 'सिद्धान्तसारादिसंग्रह' में संगृहीत।

२४९. **श्रुतावतार** : आचार्य इन्द्रनन्दी। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्, सोनागिर (दतिया) म० प्र०। ई० सन् १९९०।

२५०. **श्वेताम्बरमत-सामीक्षा** : पं० अजितकुमार शास्त्री। प्रकाशक : श्री दिगम्बर जैन युवक संघ।

२५१. **षट्खण्डागम**—सम्पादिका : ब्र० पं० सुमतिबाई शहा। श्री श्रुतभण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फलटण। ई० सन् १९६५।

२५२. **षट्खण्डागम** (द्वितीय संस्करण)—सम्पादिका : ब्र० पं० सुमतिबाई शहा। आ० शान्तिसागर 'छाणी' स्मृति ग्रन्थमाला, बुढ़ाना, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)। ई० सन् २००५।

२५३. **षट्खण्डागम** (पुस्तक १-१६) : पुष्पदन्त एवं भूतबलि। जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर। पुस्तक १, २—ई० सन् १९९२, पु० ३—ई० सन् १९९३, पु०४—ई० १९९६, पु० ५—ई० १९८६, पु० ६—ई० १९९३, पु० ७—ई० १९८६, पु० ८—ई० १९८७, पु० ९—ई० १९९०, पु० १०,११—ई० १९९२, पु० १२, १३—ई० १९९३, पु० १४—ई० १९९४, पु० १५,१६—ई० १९९५।

— धवलाटीका : आचार्य वीरसेन।

— सम्पादकीय (पुस्तक १) : डॉ० हीरालाल जैन एवं डॉ० ए० एन० उपाध्ये।

— प्रस्तावना (पुस्तक १) : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री।

२५४. **षट्खण्डागम-परिशीलन** : पं० बालचन्द्र शास्त्री। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८७।

२५५. **षट्पाहुड** : आचार्य कुन्दकुन्द। प्रकाशिका : शान्ति देवी बड़जात्या, गौहाटी। ई० सन् १९८९।

२५६. **षड्दर्शनसमुच्चय** : हरिभद्रसूरि। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन। ई० सन् १९८९।

— तर्करहस्यदीपिका टीका : गुणरत्नसूरि।

— प्रस्तावना : पं० दलसुख मालवणिया।

२५७. **संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास** : डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। ई० सन् २००१।

२४७. **श्रमण भगवान् महावीर** : पं० (मुनि) कल्याणविजय जी गणी। प्रकाशक : श्री क० वि० शास्त्र-संग्रह समिति, जालोर। वि० सं० १९९८, ई० सन् १९४१।

२४८. **श्रुतावतार** : विबुधश्रीधर। 'सिद्धान्तसारादिसंग्रह' में संगृहीत।

२४९. **श्रुतावतार** : आचार्य इन्द्रनन्दी। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्, सोनागिर (दतिया) म० प्र०। ई० सन् १९९०।

२५०. **श्वेताम्बरमत-सामीक्षा** : पं० अजितकुमार शास्त्री। प्रकाशक : श्री दिगम्बर जैन युवक संघ।

२५१. **षट्खण्डागम**—सम्पादिका : ब्र० पं० सुमतिबाई शहा। श्री श्रुतभण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फलटण। ई० सन् १९६५।

२५२. **षट्खण्डागम** (द्वितीय संस्करण)—सम्पादिका : ब्र० पं० सुमतिबाई शहा। आ० शान्तिसागर 'छाणी' स्मृति ग्रन्थमाला, बुढ़ाना, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)। ई० सन् २००५।

२५३. **षट्खण्डागम** (पुस्तक १-१६) : पुष्पदन्त एवं भूतबलि। जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर। पुस्तक १, २—ई० सन् १९९२, पु० ३—ई० सन् १९९३, पु०४—ई० १९९६, पु० ५—ई० १९८६, पु० ६—ई० १९९३, पु० ७—ई० १९८६, पु० ८—ई० १९८७, पु० ९—ई० १९९०, पु० १०,११—ई० १९९२, पु० १२, १३—ई० १९९३, पु० १४—ई० १९९४, पु० १५,१६—ई० १९९५।

— धवलाटीका : आचार्य वीरसेन।

— सम्पादकीय (पुस्तक १) : डॉ० हीरालाल जैन एवं डॉ० ए० एन० उपाध्ये।

— प्रस्तावना (पुस्तक १) : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री।

२५४. **षट्खण्डागम-परिशीलन** : पं० बालचन्द्र शास्त्री। भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली। ई० सन् १९८७।

२५५. **षट्पाहुड** : आचार्य कुन्दकुन्द। प्रकाशिका : शान्ति देवी बड़जात्या, गौहाटी। ई० सन् १९८९।

२५६. **षड्दर्शनसमुच्चय** : हरिभद्रसूरि। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन। ई० सन् १९८९।

— तर्करहस्यदीपिका टीका : गुणरत्नसूरि।

— प्रस्तावना : पं० दलसुख मालवणिया।

२५७. **संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास** : डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। ई० सन् २००१।

फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

२५८. **संस्कृत साहित्य का इतिहास** : बलदेव उपाध्याय। शारदा मंदिर वाराणसी। ई० सन् १९६५।

२५९. **संस्कृत-हिन्दी कोश** : वामन शिवराम आप्टे। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। ई० सन् १९६९।

२६०. **संस्कृति के चार अध्याय** : रामधारी सिंह दिनकर। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-१। ई० सन् १९९७।

२६१. **समन्तभद्र ग्रन्थावली** : स्वामी समन्तभद्र। वीर सेवा मंदिर ट्रस्ट प्रकाशन वाराणसी। ई० सन् १९८९।

१. आप्तमीमांसा (देवागम)
— अकलंकदेवकृत आप्तमीमांसाभाष्य।
— आचार्य वसुनन्दीकृत देवागमवृत्ति।
— पं० जुगलकिशोर मुख्तारकृत हिन्दीव्याख्या।
२. युक्त्यनुशासन।
३. स्वयम्भूस्तोत्र।
४. जिनशतक।
५. रत्नकरण्डक।
— अनुवादक : पं० जुगलकिशोर मुख्तार

२६२. **समयसार** : आचार्य कुन्दकुन्द। अहिंसा मंदिर प्रकाशन, १ दरियागंज, दिल्ली ७।
— आत्मख्याति व्याख्या : आचार्य अमृतचन्द्र सूरि।
— तात्पर्यवृत्ति : आचार्य जयसेन।
— हिन्दीटीका : पं० जयचन्द।

२६३. **समावायांगसूत्र**—प्रकाशक : सेठ माणेकलाल चुन्नीलाल, अहमदाबाद। ई० १९३८।

२६४. **समाधितन्त्र** : देवनन्दी, अपरनाम—पूज्यपादस्वामी। श्री वीरसेवा मंदिर, सरसावा (सहारनपुर)। ई० सन् १९३९।

२६५. **सम्मइसुत्त** (सन्मतिसूत्र, सन्मतितर्क) : आचार्य सिद्धसेन। ज्ञानोदय ग्रन्थ प्रकाशन समिति, नीमच (म० प्र०) ई० सन् १९७८।
— सम्पादक : देवेन्द्र कुमार शास्त्री, नीमच।

२६६. **सर्वार्थसिद्धि** (तत्त्वार्थसूत्र-वृत्ति) : पूज्यपाद स्वामी। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली। ई० सन् १९९५।
— सम्पादन-अनुवाद : सिद्धान्ताचार्य पं० फूलचन्द्र शास्त्री।

२६७. **सर्वार्थसिद्धि** : पूज्यपाद स्वामी। भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्। ई० सन् १९९५।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

२६८. **सागारधर्मामृत** : पं० आशाधर जी। प्रकाशक : मूलचन्द किशनदास कापड़िया, सूरत। ई० सन् १९४०।
— हिन्दी-टीकाकार : पं० देवकीनन्दन सिद्धान्तशास्त्री।
२६९. **सिद्धहेमशब्दानुशासन** (अष्टम अध्याय : प्राकृतव्याकरण) : 'कलिकालसर्वज्ञ' आचार्य हेमचन्द्र।
२७०. **सिद्धान्तसमीक्षा** (भाग ३)—प्रकाशक : हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,बम्बई। ई० सन् १९४५।
२७१. **सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ।**
२७२. **सिद्धान्ताचार्य पं० फूलचन्द्र शास्त्री अभिनन्दनग्रन्थ**—प्रकाशक : सिद्धान्ताचार्य पं० फूलचन्द्र शास्त्री अभिनन्दनग्रन्थ प्रकाशन समिति, वाराणसी। ई० सन् १९८५।
२७३. **सूत्रकृतांगसूत्र** : (पंचम गणधर सुधर्मस्वामी-प्रणीत द्वितीय अंग)—प्रथम एवं द्वितीय भाग। प्रधान सम्पादक : श्री मिश्रीलाल जी महाराज 'मधुकर'। श्री आगमप्रकाशन समिति ब्यावर (राजस्थान)।
२७४. **सूर्यप्रकाश-परीक्षा** : पं० जुगलकिशोर मुख्तार। प्रकाशक : जौहरीमल जैन सराफ, दरीवाँकला, देहली। ई० सन् १९३४।
२७५. **सौन्दरनन्द** (महाकाव्य) : अश्वघोष। प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी।
२७६. **स्त्रीनिर्वाण प्रकरण** : ('शाकटायन व्याकरण' के साथ संलग्न। भारतीय ज्ञानपीठ। ई० सन् १९७१) : यापनीय-यतिग्रामाग्रणि-भदन्त-शाक-टायनाचार्य, मूलनाम पाल्यकीर्ति (देखिए, पं० नाथूराम प्रेमी : 'शाकटायन और उनका शब्दानुशासन'/ 'जैन सिद्धान्त भास्कर'/ भाग ९/ किरण १/ जून १९४२)।
२७७. **स्थानांगसूत्र** (पंचम गणधर सुधर्म स्वामी-प्रणीत तृतीय अंग) : आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राज०)।
— अनुवादक-विवेचक : पं० हीरालाल शास्त्री।
२७८. **स्वामी समन्तभद्र** : पं० जुगलकिशोर मुख्तार। जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, पो०—गिरगाँव, बम्बई। ई० सन् १९२५।
२७९. **हरिवंशपुराण** : आचार्य जिनसेन। भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली। ई० सन् १९९८।
— सम्पादन-अनुवाद-प्रस्तावना : डॉ० पन्नालाल जैन साहित्याचार्य।
२८०. **हर्षचरित** : बाणभट्ट। चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। ई० सन् १९९८।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

— 'सङ्केत' संस्कृत व्याख्या : श्री शंकर कवि।

२८१. **हूमड़ जैनसमाज का सांस्कृतिक इतिहास** (भाग २)—सम्पादिका : श्रीमती कौशल्या पंतग्या। प्रकाशक : श्री अखिल भारतीय हूमड़ जैन इतिहास शोधसमिति, १, सुदर्शन सोसायटी, नारायणपुरा, अहमदाबाद।

English Books

1. Aspects of Jainology (Vol.III) : P.V. Research Institute, Varanasi.
—The Date of Kundakundācārya : M.A. Dhaky.

2. Gender And Salvation : Padmanabh S. Jaini , Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 1992 A.D.

3. Harappa And Jainism : T.N. Ramchandran, Published by Kundakunda Bharti Prakashan, New Delhi, 1987 A.D.
—Introduction : Dr. Jyotindra Jain.

4. History of Jaina Monachism (From Inscriptions And Literature) : By Shantaram Balchandra Deo. Deccan College Post-graduate And Research Institute, Poona 1956 A.D.

5. Indian Philosophy (Vol. II) : S. Rādhākrishṇan. Delhi Oxford Univesity Press.

6. Pañchāstikāyasāra : Āchārya Kundakunda, Bhārtiya Jnānpīth Publication, 1975 A.D.
—English Commentary & Introduction : Prof. A. Chakravartī Nayanār.

7. Sanskrit–English Dictionary : M. Monier Williams, Motilal Banarsi-das, Delhi, 1999 A.D.

8. The Hāthīgumphā Inscription of Khāravēla And the Bhabru Edict of Aśoka : By Shashikant. D.K. Printworld (P) Ltd., New Delhi—110015. 1971 A.D.

शोध-पत्रिकाएँ

१. **अनेकान्त** (मासिक)—सम्पादक : पं० जुगलकिशोर मुख्तार, समन्तभद्राश्रम, करौलबाग, दिल्ली।

वर्ष	किरण	मास	वीर नि० सं०	वि० सं०	ई० सन्
१	३	माघ	२४५६	१९८६	१९२९
१	४	फाल्गुन	,,	,,	,,

वर्ष	किरण	मास	वीर नि० सं०	वि० सं०	ई० सन्
१	५	चैत्र	,,	१९८६	१९२९
१	६-७	वैशाख-ज्येष्ठ	,,	१९८७	१९३०
१	८-९-१०	आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद	,,	,,	,,
१	११-१२	आश्विन-कार्तिक	,,	,,	,,

अनेकान्त (मासिक) के निम्नलिखित अंकों का सम्पादन-स्थान : वीरसेवा मंदिर, समन्तभद्राश्रम, सरसावा (जिला-सहारनपुर) उ० प्र०।

वर्ष	किरण	मास	वीर नि० सं०	वि० सं०	ई० सन्
२	३	पौष, जनवरी	२४६५	१९९५	१९३८
२	५	फाल्गुन, मार्च	,,	,,	१९३८
२	६	चैत्र, अप्रैल	,,	१९९६	१९३९
२	९	आषाढ़, जुलाई	,,	,,	१९३९
२	१०	प्रथम श्रावण, अगस्त	,,	,,	१९३९
४	१	फरवरी	—	१९९८	१९४१
५	१०-११	कार्त्तिक-मार्गशीर्ष, नवम्बर-दिसम्बर	२४६९	१९९९	१९४२
५	१२	पौष, जनवरी	,,	,,	१९४३
६	१०-११	मई-जून	,,	२००१	१९४४
६	१२	श्रावण शुक्ल, जुलाई	२४७०	२००१	१९४४
७	१-२	भाद्र०-आश्विन, अगस्त-सितम्बर	,,	,,	१९४४
७	३-४	कार्त्तिक-मार्गशीर्ष अक्टूबर-नवम्बर	२४७१	२००१	१९४४
वर्ष	**किरण**	**मास**	**वीर नि० सं०**	**वि० सं०**	**ई० सन्**
७	५-६	पौष-माघ दिसम्बर-जनवरी	,,	,,	१९४४-४५
७	७-८	फाल्गुन-चैत्र, फर०-मार्च	२००१-२	,,	१९४५
८	२	फरवरी			१९४६
८	३	—	—	—	—
८	४-५	—	—	—	—

वर्ष	किरण	मास	वीर नि० सं०	वि० सं०	ई० सन्
८	१०-११	मार्च-अप्रैल	२४७३	२००४	१९४७
८	१२	आश्विन, अक्टूबर	२४७३	,,	१९४७

(वर्ष ८ के **मास-सम्बन्धी अनियमित उल्लेख** के कारण का निर्देश इसी अंक (अक्टूबर १९४७) के आवरण पृष्ठ २ पर किया गया है।)

वर्ष	किरण	मास	वीर नि० सं०	वि० सं०	ई० सन्
९	१	—	—	—	—
१४	६	माघ, जनवरी	२४८३	२०१३	१९५७
२८	१	महावीर निर्वाण विशेषांक	२५०१	२०३२	१९७५
४६	२	अप्रैल-जून	२५१८	२०५०	१९९३

२. **जिनभाषित** (मासिक) मई २००३—सम्पादक : प्रो० रतनचन्द्र जैन, भोपाल, म०प्र०। प्रकाशक—सर्वोदय जैन विद्यापीठ, १/२०५, प्रोफेसर्स कॉलोनी, आगरा (उ०प्र०)।

३. **जैन सिद्धान्त भास्कर** (भास्कर) मासिक

भाग	किरण	मास	ई० सन्
९	१	जून	१९४२
१०	२	जुलाई	१९४३
११	१	जून	१९४४
१३	२	—	—
२३	२	—	—

४. **जैनहितैषी** (मासिक)—सम्पादक और प्रकाशक : श्री नाथूराम प्रेमी।

भाग	किरण	मास	वीर नि० सं०	ई० सन्
६	७-८	वैशाख-ज्येष्ठ	२४३७	१९१०
७	९	आषाढ़	२४३७	१९१०
भाग	**किरण**	**मास**	**वीर नि० सं०**	**ई० सन्**
७	१०-११	श्रावण-भाद्र	२४३७	१९१०
८	२	मार्गशीर्ष	२४३८	१९११
११	१०-११	श्रावण-भाद्र	२४४१	१९१४

५. **धर्ममंगल** (मासिक), १६ मई १९९७—सम्पादिका : प्रा० सौ० लीलावती जैन। ४/५, भीकमचंद जैननगर, जलगाँव (महाराष्ट्र)।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक टस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

६. **प्राकृतविद्या,** जनवरी-मार्च १९९६—सम्पादक : डॉ० सुदीप जैन । (प्राकृत भवन), १८-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली—११००६७।

७. **शोध** (साहित्य-संस्कृति-गवेषणा-प्रधान पत्रिका), अंक ५/१९८७-८८ ई०—सम्पादक : डॉ० बनारसीप्रसाद भोजपुरी एवं डॉ० राजाराम जैन। नागरी प्रचारिणी सभा आरा (भोजपुर, बिहार)। अंक १२-१३ (संयुक्तांक)/ई० सन् १९९९-२०००, २०००-२००१। सम्पादक : प्रो० (डॉ०) राजाराम जैन।

८. **शोधादर्श**—४८, नवम्बर २००२ ई०—प्रधान सम्पादक : श्री अजितप्रसाद जैन। सहसम्पादक : श्री रमाकान्त जैन। प्रकाशक : तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र समिति, उ० प्र०, पारस सदन, आर्यनगर, लखनऊ २२६ ००४।

९. **श्रमण** (त्रैमासिक शोध पत्रिका—सम्पादक : प्रो० सागरमल जैन। पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी)।

— १. अक्टूबर-दिसम्बर १९९७ ई०।

— २. जुलाई-दिसम्बर २००५ ई०।

— ३. अप्रैल-जून २००६ ई०।

English Journals

1. Bombay University Journal, May 1933. (Yāpanīya Saṇgh, A Jaina Sect : Dr. A.N. Upadhye)

2. The Indian Antiquary : A Journal of Oriental Researeh in Archaeology, History, Literature, Languages, Philosophy, Religion, Folklore etc.

— 1. Vol. XIV, January 1885.

— 2. Vol. XX, October 1891.

— 3. Vol. XXI, March 1892.

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in